ओ३म् ५।१।१९६४

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला—सं० २१

पुराण किसने बनाये

लेखक
श्रीराम आर्य
कासगंज

प्रकाशक
वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ,
कासगंज (उत्तर प्रदेश) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १३९
सृष्टि सम्वत् १९७२९ ४९०६४

प्रथमबार] सन् १९६३ [मूल्य ७५ नये पैसे

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर २८७५
पु. परिग्रहण क्रमांक ...

ओ३म्

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला—सं० २१

पुराण किसने बनाये

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक ... 2875 .
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

लेखक
डा० श्रीराम आर्य
कासगंज

डा० भवानीलाल भारती
संख्या ...
तिथि ...
पुस्तकालय ...
अधि संख्या
विषय ...
दिनांक 1.2.75

प्रकाशक
वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ,
कासगंज (उत्तर प्रदेश) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १३९
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६४

प्रथमबार] सन् १९६३ [मूल्य ७५ नये पैसे

भूमिका

भारतवर्ष में आर्य जाति के पतन में बहुत बड़ा हाथ पुराणों का रहा है। वेदों की महत्ता को कम करना, वेदों के स्वाध्याय अन्वेषण से विद्वानों को विरत करना, वेदों के स्थान पर पुराणों का प्रचार करना, एक ईश्वर विश्वास को मिटा कर नाना प्रकार के कल्पित देवी-देवताओं, भूत-प्रेतों की पूजा उपासना प्रचलित करना, मूर्ति पूजा, मूर्ति के ऊपर पशु-पक्षी आदि जीवों की, यहाँ तक कि नर-बलि तक की प्रथा जारी करना, मृतक श्राद्धों में माँसाहार का विधान करना, यज्ञों में बकरे, घोड़े, व गौ आदि पशुओं का बलिदान कराना, माँसाहार को प्रोत्साहन देना, जुआ व शराब का समर्थन करना, देवी देवताओं, ऋषि मुनियों को चरित्रहीन बता कर कलङ्कित करना आदि सभी प्रकार की बुराइयों के देश में प्रचार के लिए पुराण उत्तरदायी हैं।

इन पुराणों की रचना अनेक लोगों के द्वारा समय-समय पर की गई है। पर इनके बनाने वालों ने अपना नाम न देकर इनको महर्षि वेदव्यास जी द्वारा प्रणीत बताया है ताकि इन ग्रन्थों की मान्यता में कोई भी सन्देह न करे। सारे ही पुराणों में लग-भग एक से ही विषय हैं, एक प्रकार की कथायें हैं, सारे ही तीर्थों व व्रतों का वर्णन सभी पुराणों में भरा है। यदि वेदव्यास जी या किसी भी एक व्यक्ति ने इनको बनाया होता तो भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न विषयों का वर्णन किया जाता। एक ही बात को बार-बार सारे पुराणों में न लिखा जाता, जैसा कि विद्वान लोग अपने ग्रन्थों में आज भी करते हैं।

पुराण सं कृत में हैं। बहुत मूल्यवान भी हैं। अतः सर्व साधारण की तो कौन कहे, बड़े-बड़े विद्वानों को सारे पुराणों के दर्शन नहीं हो पाते हैं। बहुत कम विद्वान चन्द पुराणों का अध्ययन कर पाते हैं। इसलिए जनता में धर्म एवं पुराणों के नाम पर अन्धश्रद्धा बनी हुई है। यदि पुराणों का हिन्दी अनुवाद सुलभ हो सके और जनता एक बार उनको देख सके तो पुराणों द्वारा फैलाया हुआ पाखण्ड स्वतः ध्वस्त हो जावेगा। हमने पुराणों को पढ़ा है। हम जानते हैं कि पुराणों की वास्तविक स्थिति क्या है, उनमें कितना पोलखाता भरा है। जनता को पुराणों की स्थिति से अवगत कराने के लिए हमने इस पुस्तक का निर्माण किया है। पुस्तक अधिक न बढ़ जावे इसलिए अति संक्षेप से हमने चन्द विषयों पर प्रकाश डाल कर अपने पक्ष को स्थापित किया है ताकि पाठक इसे पढ़ कर पुराणों के सम्बन्ध में दृष्टिकोण स्थापित कर सकें। यदि पाठकों ने इस पुस्तक को पसन्द किया तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

१-९-६३

निवेदक:—डा० श्रीराम आर्य

विषय-सूची

१.	पुराण व्यासजी ने बनाए	१
२.	पुराण ब्रह्माजी बनाए	२
३.	पुराण पाराशरजी ने बनाये	३
४.	हर द्वापर में नये पुराण बनते हैं	४
५.	पुराण २६ थे	५
६.	अठारह पुराणों की विभिन्न सूचियाँ	५
७.	पुराणों की श्लोक व अध्याय संख्या में गड़बड़ी	७
८.	कुल पुराणों में कभी १२००० श्लोक थे	८
९.	१८ पुराणों में चार लाख श्लोक हैं	८
१०.	उप पुराणों के नाम	९
११.	पुराण का लक्षण	१०
१२.	पुराणों में जैन व बौद्ध धर्म का वर्णन	११
१३.	मत्स्य पुराण अ० २४ श्लोक ४७ में लिखा है	१२
१४.	स्कन्द पुराण काशी खण्ड अ० ३७ श्लोक ७७ में लिखा है	१२
१५.	उर्दू पढ़ने व जैन मन्दिर में जाने का निषेध	१३
१६.	जैन मत निन्दा	१३
१७.	जैन धर्म की व्याख्या	१३
१८.	बौद्ध धर्म	१४
१९.	बौद्ध धर्म निन्दा	१५
२०.	बुद्ध जी	१५
२१.	ऋषदेव जी	१६
२२.	पुराणों में इतिहास	१६
२३.	शिव प्रशंसा	१९
२४.	शिवजी की निन्दा	२०
२५.	ब्रह्मा जी की प्रशंसा	२२
२६.	ब्रह्मा जी की निन्दा	२३
२७.	विष्णु जी की प्रशंसा	२४
२८.	विष्णु निन्दा	२४
२९.	सर्वदेव निन्दा	२५
३०.	गणेश प्रशंसा	२६
३१.	गणेश निन्दा	२६

३२.	इन्द्र-अग्नि-चन्द्रमा-ब्रह्मा की निन्दा	२६
३३.	देवता व ऋषियों की निन्दा	२७
३४.	वशिष्ठ ऋषि का अपमान	२७
३५.	शृङ्ग ऋषि हिरनी से	२८
३६.	माण्डव्य मुनि मेंढ़की से	२८
३७.	शुकदेव जी तोती से व कणादि मुनि मेंढ़की से	२८
३८.	सभी पुराण बनाने वालों की निन्दा	२८
३९.	नरक में ले जाने वाले पुराणों की सूची	२९
४०.	पुराणों में ब्राह्मण निन्दा	३०
४१.	विष्णु प्रशंसा व शिवादि अन्य देवों की निन्दा	३१
४२.	विष्णु निन्दा तथा शिव व उसके निर्माल्य की प्रशंसा	३२
४३.	देवी के पैरों के तले में पाँच महा प्रेतों का वास	३३
४४.	पुराणों में पशु बलि का आदेश	३५
४५.	पुराणों में मनुष्य बलि का आदेश	३५
४६.	श्राद्ध में माँस भक्षण	३६
४७.	हिमालय पर ऊँचे वृक्ष	३७
४८.	राजा सुद्युम्न की कहानी	३८
४९.	मर्दों को औरत बनने के शाप की कथा	३९
५०.	हनुमान जी की विचित्र पैदायश	४१
५१.	ब्रह्माजी का पुत्री-गमन	४३
५२.	सूर्य नारायण की चरित्र हीनता	४५
५३.	वीर्य पीने का विधान	४६
५४.	सात समुद्रों की विलक्षण प्रकार से उत्पत्ति	४७
५५.	वृक्ष वनस्पतियों की उत्पत्ति	४८
५६.	श्री कृष्ण द्वारा गोपियों के चीर-हरण की कथा	५०
५७.	पुराणों का भूगोल वर्णन	५४
५८.	सारे देवता शिवजी के नौकर हैं	५७
५९.	पुराण बनाने वालों की सूची	५८
६०.	सौर पुराण के कर्त्ता का झगड़ा	६०
६१.	वेद में पुराण शब्द	६२
६२.	पुराण बनाने का उद्देश्य क्या था ?	६२

ग्रन्थकार—

डा० श्रीराम आर्य, कासगंज

पुराण किसने बनाये

साधारणतया पुराण शब्द का अर्थ होता है पुराना या प्राचीन। परन्तु वर्तमान काल में यह शब्द उन अष्टादश ग्रन्थों के लिये रूढ़ि हो गया है जिन्हें वर्तमान तथाकथित सनातन धर्म में मुख्य शास्त्र माना जाता है जिसमें भागवतादि ग्रन्थ सम्मिलित हैं। पौराणिक विद्वानों की मान्यता है, कि इन ग्रन्थों की रचना महर्षि कृष्ण द्वैपायन (वेद व्यास जी महाराज) ने द्वापर के अन्त में की थी जिसे लगभग ५०६० वर्ष अब तक होते हैं। इसके लिये वे लोग निम्न प्रमाण प्रस्तुत किया करते हैं:—

पुराण व्यास जी ने बनाये

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतो सुतः। (देवी भागवत १।३।१७)

अर्थात्—१८ पुराणों को सत्यवती के पुत्र व्यासदेवजी ने बनाया था।

पौराणिक विद्वानों की आस्था इस प्रमाण पर इतनी अधिक है कि उनको इस विश्वास से हटाना सरल कार्य नहीं है। कोई कितने भी उत्तम तर्क व प्रमाण इसके विपरीत उनके सामने उपस्थित करे वे उसे सुनने तक को तैयार नहीं होते हैं। उनके इस विश्वास का एक आधार यह भी होता है कि समस्त पुराण एवं उप-पुराणों के ऊपर उनके लेखक के स्थान पर 'व्यास कृत' शब्द छपा होता है। सम्पूर्ण सनातनी साहित्य में चाहे वे भाषा में हों अथवा संस्कृत में, गद्य में हों या पद्य में लिखे हों, पुराणों को व्यास कृत ही माना गया है। अतः

किसी भी पुराणों के विश्वासी के लिये यह मानना कि पुराणों को व्यास कृत मानने वाले सारे ग्रन्थकार व विद्वान गलती पर हैं, एक अति दुष्कर बात है।

हम आज इस पुस्तक में वर्तमान सनातनी विद्वानों के इसी दावे की तर्क व प्रमाणों की कसौटी पर परीक्षा करके यह सिद्ध करेंगे कि उनका यह दावा सत्य नहीं है। वरन् सत्य बात यह है कि पुराणों का रचना काल व्यास जी के बहुत बाद का है, उनके बनाने वाले अनेक व्यक्ति रहे हैं, अर्थात् सारे पुराण किसी भी एक व्यक्ति की रचनायें नहीं हैं। पुराणों का रचना काल बौद्ध व जैन धर्म के बाद अर्थात् २५०० वर्ष से लेकर अंग्रेजों के भारत के शासन काल तक चलता रहा है। हमारा यह दावा अनुमान पर आधारित नहीं है वरन् पुराणों के अन्दर ही इस विषय की अन्तःसाक्षी विद्यमान है।

पौराणिक विद्वान् अपने पुराणों को भी नहीं पढ़ते हैं। अन्यथा उनको अपने दावे को मिथ्या सिद्ध करने वाले प्रमाण पुराणों में मिल सकते हैं। १८ पुराणों का कर्त्ता व्यासजी को जहाँ एक स्थल पर बताया गया है, वहाँ दूसरे स्थल पर लिखा है—

पुराण ब्रह्माजी ने बनाये

लब्ध विद्येन विधिना प्रजा सृष्टि वितन्वता।
प्रथमं सर्व शास्त्राणां पुराणं ब्रह्मणा स्मृतम् ।३१।
अनन्तरं तु वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः ॥
प्रवृत्तिस्सर्व शास्त्राणं तन्मुखाद् भवत्ततः ॥३२॥

(शिव पुराण, वायु सं अ. १)

अर्थात्—ब्रह्माजी ने विद्या को प्राप्त हो, प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से सब शास्त्रों के बीच में प्रथम पुराणों को उत्पन्न किया।३१।

इसके बाद उनके मुँह से वेद निर्गत हुए। उसके बाद ब्रह्मा के मुँह से सब शास्त्रों की प्रवृत्ति हुई।३२।

यही प्रमाण मत्स्य पुराण सृष्टि प्रकरण अ० ३ तथा वायु पुराण १।६० में भी आता है। इससे सनातनी विद्वानों का वह दावा मिथ्या हो जाता है कि व्यासजो ने पुराण बनाये थे। व्यासजी को हुए लगभग ५००० वर्ष होते हैं, वे महाभारत काल में थे। जब कि सृष्टि की रचना हुये लगभग दो अरब वर्ष बीत चुके हैं। इन दोनों प्रमाणों में कौन-सा सच्चा है और कौन-सा झूठा है, यह निर्णय करना सनातनी विद्वानों का काम है न कि हमारा। हम तो दोनों ही प्रमाणों को मिथ्या मानते हैं। अब कुछ और नवीन प्रमाण देखिये--

पुराण पाराशर जी ने बनाये

पुलस्त्य ने वरदान दिया—

पुराण संहिता कर्ता भवान्वत्स भविष्यति ।२६।

अर्थ—हे पाराशर जी ! तुम पुराण संहिता के बनाने वाले होवोगे।

पाराशर उवाच—

सोऽहं वदाम्यशेषं ते मैत्रेय परिप्रच्छते ।
पुराण संहितां सम्यक् तां निबोध यथातथम् ॥३०॥

(विष्णु पुराण १।१)

पाराशर जी ने कहा—

अर्थ—हे मैत्रेय ! तुम्हारे पूछने से मैं उस सम्पूर्ण पुराण संहिता को तुम्हें सुनाता हूँ, तुम उसे ध्यान देकर सुनो।

इस प्रमाण के अनुसार पुराणों के बनाने वाले व्यास जी न होकर पाराशर जी (व्यासजी के पिताजी) थे। पुराण का यह प्रमाण पुराणों के व्यास कृत होने के दावे का स्पष्ट खण्डन करता है।

हर द्वापर में नये पुराण बनते हैं।

एवं व्यस्ताश्च वेदाश्च द्वापरे द्वापरे द्विजा।
निर्मितानि पुराणानि अन्यानि च ततः परम् ॥३५॥

(शिव पुराण वायु सं अ. १)

अर्थ—हे ब्राह्मणो ! इस प्रकार प्रत्येक द्वापर में वेदों का विभाग होता है, और दूसरे पुराण निर्मित होते हैं !

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि यह पुराण नित्य ग्रन्थ नहीं हैं। यह कालान्तर में नष्ट हो जाते हैं। यहाँ एक बड़ी पहेली पैदा होती है। इस पृथ्वी की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष की है। इसमें १ हजार चतुर्युगी होती हैं। प्रत्येक चतुर्युगी में सत्युग-त्रेता-द्वापर व कलियुग यह चार युग होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पृथ्वी की आयु में १।१ हजार बार चारों युग क्रमशः आते जाते हैं। हम जिस चतुर्युगी में रह रहे हैं वह सातवें वैवस्वत मन्वन्तर की २८ वीं चतुर्युगी है। इसके पूर्व ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं जिनमें ४२७ बार द्वापर आया और निकल गया। तथा २८ बार इस सातवें मन्वन्तर में भी अपने क्रम पर आकर निकल गया। इस प्रकार जबसे सृष्टि बनी थी तब से अब तक ४५७ बार सत्युग, ४५७ बार त्रेता, ४५७ बार द्वापर व ४५६ बार कलियुग आये व निकल गये और अब ४५७ वीं बार कलियुग चालू है। इसका अर्थ यह होता है कि ४५६ बार इस सृष्टि काल में पुराण नये बनकर नष्ट हो चुके हैं। यह ४५७ वीं बार के बने पुराण हैं। पुराणों के अनुसार यदि वेद व्यासजी ने पुराणों को बनाया था तो वह ४५७ वें द्वापर में सत्यवती व पाराशर के संयोग से पैदा हुए थे। इस प्रकार पुराण ब्रह्माजी के द्वारा वेदों से पूर्व एवं सृष्टि के आदि में उत्पन्न सिद्ध नहीं होते हैं। साथ ही पुराण का यह दावा भी मिथ्या हो जाता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा जी पुराणों को बनाते हैं। एक प्रमाण पुराणों को द्वापर में व्यास कृत बताता है। दूसरा प्रारम्भ

सृष्टि में ब्रह्माजी द्वारा निर्मित एवं नित्य मानता है। तीसरा पुराण इनका कर्त्ता पाराशर जी को बताता है। यह सब परस्पर विरुद्ध बातें हैं और तीनों ही मिथ्या हैं।

पुराणों की मान्यता है कि पुराण १८ हैं। इसी प्रकार उपपुराण भी १८ माने जाते हैं। किन्तु भिन्न-भिन्न पुराणों में इनकी सूची व नामावली में बहुत भेद मिलता है। साथ ही पुराणों की श्लोक संख्या में भी जमीन आसमान का अन्तर देखा जाता हैं।

पुराण २६ थे

षड़्विंशति पुराणानां मध्येऽप्येकं शृणोति यः।
पठेद्वाभक्तियुक्तस्तु स मुक्तो नात्र संशयः ॥४१॥

(शिव पुराण उमा सं अ १)

अर्थ—२६ पुराणों को जो सुनता है और भक्तिपूर्वक पाठ करता है वह मुक्त होगा, इसमें संशय नहीं।

इससे स्पष्ट है कि शिव पुराण के बनने के समय पुराणों की संख्या २६ रही होगी। किन्तु बाद को यह संख्या १८ निश्चित की गई है। पुराणों की भिन्न-भिन्न सूचियाँ जो उनमें दी हैं, हम उनमें से कुछ यहाँ प्रस्तुत करते हैं जिनसे यह देखा जा सकेगा कि अब भी पुराणों की ठीक-ठीक संख्या व उनकी श्लोक संख्या का पता नहीं लगता है।

भागवत, देवी भागवत तथा मत्स्य पुराण में १८ पुराणों के नाम निम्न प्रकार दिये हैं।

अठारह पुराणों की विभिन्न सूचियाँ

(१) ब्रह्म। (२) पद्म। (३) विष्णु। (४) वायु। (५) भागवत। (६) नारद। (७) मार्कण्डेय। (८) अग्नि। (९) भविष्य। (१०) ब्रह्मवैवर्त। (११) लिङ्ग। (१२) स्कन्द। (१३) वामन। (१४) कूर्म। (१५) मत्स्य। (१६) गरुड़। (१७) ब्रह्माण्ड। (१८) वाराह।

ब्रह्मवैवर्त और पद्म पुराणों में सूची निम्न प्रकार दी है--

(१) ब्रह्म। (२) पद्म । (३) विष्णु । (४) शिव। (५) भागवत। (६) नारद। (७) मार्कण्डेय। (८) अग्नि। (९) भविष्य। (१०) ब्रह्मवैवर्त। (११) लिङ्ग । (१२) बाराह। (१३) वामन। (१४) कूर्म। (१५) स्कन्द। (१६) मत्स्य । (१७) गरुड़ । (१८) ब्रह्माण्ड।

भविष्य पुराण में यह सूची भिन्न प्रकार से निम्न प्रकार दी है-

(१) विष्णु। (२) स्कन्द। (३) पद्म। (४) भागवत। (५) ब्रह्म। (६) गरुड़। (७) मत्स्य । (८) कूर्म। (९) नृसिंह। (१०) वामन। (११) शिव। (१२) वायु। (१३) मार्कण्डेय। (१४) अग्नि। (१५) लिंग। (१६) ब्रह्माण्ड। (१७) वाराह। (१८) भविष्य।

उपरोक्त छः पुराणों की पुराणोक्त सूचियाँ देखने पर ज्ञात होता है कि भागवत, देवी भागवत तथा मत्स्य पुराणों ने जहाँ वायु पुराण को मुख्य पुराणों में मानकर अपनी सूची १८ पुराणों की पूरी की है वहाँ ब्रह्म वैवर्त और पद्म पुराणों में वायु को निकाल दिया गया है, और उसके स्थान पर शिव पुराण को अपनी सूची में सम्मिलित किया है। भविष्य पुराण ने नारद और ब्रह्मवैवर्त को मुख्य पुराण नहीं मानकर इन्हें सूची में से निकाल बाहर किया है। तथा इनके स्थान पर नृसिंह, शिव तथा वायु इन पुराणों को अपनी सूची में सम्मिलित करके १८ पुराणों की सूची तैयार की है।

यह सूचियाँ भागवत स्कन्द १२ अ० ८, देवी भागवत स्कन्द १ अ० ३ पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ० २३६, ब्रह्मवैवर्त कृष्ण जन्म खंड अ० १३१, मत्स्य पुराण अ० ५३, भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व खण्ड ३ अ० २८ में देखी जा सकती हैं। पुराणों में जो भिन्न भिन्न पुराणों की श्लोक संख्या दी है वह भी परस्पर विरुद्ध है। इसी प्रकार का

सूची भेद एवं श्लोक संख्या में भेद सभी पुराणों में वर्णित सूचियों में देखने में आता है। अतः स्पष्ट है कि पुराणों के आधार पर १८ पुराणों की सर्वमान्य सूची भी पौराणिक विद्वान पेश नहीं कर सकते हैं।

पुराणों की श्लोक व अध्याय संख्या में गड़बड़ी

पुराणों के जितने भी संस्करण भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रकाशित हुए हैं उनमें सभी में पाठ भेद, श्लोक संख्या में अन्तर तथा अध्यायों में अन्तर देखा जाता है।

श्री मद्भागवत् पुराण गीता प्रेस गोरखपुर के छपे हुए में कुल श्लोक संख्या १४१८० है तथा महात्म्य प्रकरण जो पद्म पुराण से लेकर उसके प्रारम्भ में जोड़ा गया है उसकी श्लोक संख्या ५०२ है। जब कि भागवत के बारे में स्पष्ट उल्लेख सभी पुराणों में यह है कि 'अष्टादश सहस्रं श्री भागवत मिष्यते' (भाग० १२-३३-९७)। उसकी श्लोक संख्या १८००० है। इसका अर्थ यह हुआ कि वर्तमान भागवत में से ३८२० श्लोक निकाल डाले गये हैं। जिस ग्रन्थ में १८००० में से ३८२० श्लोक कम कर दिये गये हों,वह कटा-छटा अधूरा ग्रन्थ प्रमाणिक नहीं माना जा सकता है। इसी प्रकार पद्म पुराण आनन्द आश्रम पूना के छपे में तथा 'मोर' के कलकत्ता संस्करण में श्लोकों व अध्यायों का विशाल अन्तर देखने में आता है। यही स्थिति अन्य सभी पुराणों की है। पुराणों की संख्या में भी भेद रहा है।

शिव पुराण के पीछे दिये गये प्रमाण से प्रगट होता है कि कभी पुराणों की संख्या २६ थी। बाद को उनमें से आठ पुराण नष्ट कर दिये गये और शेष १८ पुराण ही रह गये। इनकी श्लोक संख्या भी प्रारम्भ में कितनी थी, यह भी पुराण के निम्न प्रमाण से स्पष्ट हो जाता है—

कुल पुराणों में कभी १२००० श्लोक थे—

भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व अ० १ में लिखा है—

सर्वाण्येव पुराणानि संज्ञेयानि नरर्षभ ।
द्वादशैव सहस्राणि प्रोक्तानिह मनीषिभिः ॥१०३॥

पुनर्वृद्धि गतानीह आख्यानैर्विविधैनृप ।
यथा स्कान्दं तथाचेदं भविष्यं कुरुनन्दन ॥१०४॥

स्कान्दं शत सहस्रं तु लोकानांज्ञातमेव हि ।
भविष्यमेतदृषिणां लक्षार्धं संख्यया कृतम् ॥१०५॥

अर्थात्—हे राजन् ! सारे पुराणों में कुल मिलाकर १२००० श्लोक थे ऐसा विद्वान् कहते हैं, उनमें अनेक प्रकार के उपाख्यान (कथा कहानियां) वाद को जोड़-जोड़कर उनकी संख्या बढ़ादी गई। जैसे स्कन्द पुराण में १ लाख श्लोक तथा भविष्य की श्लोक संख्या ५० हजार तक पहुँचा दी गई।

जब कि भागवत स्कन्द १२ अ० १३ श्लोक ६ में भविष्य की श्लोक संख्या 'चतुर्दश भविष्यं स्यात्तथा पंच शतानिच' अर्थात् १४५०० लिखी है। अर्थात् भागवत् बनने तक भविष्य पुराण में १४ हजार ही श्लोक थे और अब ५० हजार हो चुके हैं। पुराणों की वास्तविक स्थिति प्रकट करने के लिये उपरोक्त प्रमाण पुष्कल प्रकाश डालते हैं। कभी जिन पुराणों में केवल बारह हजार श्लोक मात्र थे, अब उन्हीं के बारे में पुराणों में लिखा मिलता है—

१८ पुराणों में चार लाख श्लोक हैं—

एवं पुराण सन्दोहश्चतुर्लक्ष उदाहृतः ॥

(भागवत १२।३३।६)

अर्थात्—अठारह पुराणों में चार लाख श्लोक हैं।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि तीन लाख अट्ठासी हजार नये गढ़कर लोगों ने बारह हजार श्लोकों में जोड़ दिये हैं। पुराणों का सम्पूर्ण उपाख्यान भाग भविष्य पुराण के अनुसार पूर्णतः बाद का प्रक्षिप्त अंश है। इस भयंकर प्रक्षेप को देखकर आश्चर्य होता है। इसी प्रकार का भयंकर प्रक्षेप महाभारत में भी देखने में आता है। मध्यवर्ती काल में भारतीय संस्कृत साहित्य को किस प्रकार भ्रष्ट किया गया है, यह इस बात का प्रमाण है। वर्तमान में पुराण ग्रन्थ जिस रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं, उससे उनकी सर्वांश में प्रमाणिकता स्वीकार नहीं की जा सकती है।

उपपुराणों के नाम

पुराणों के समान ही उपपुराणों की स्थिति है। उनकी भी संख्या १८ बताई जाती है। कुछ विद्वान् उपपुराणों को निम्न प्रकार मानते हैं—

१ आदि पुराण	७ नारद	१३ महेश्वर
२ नृसिंह	८ नन्दिकेश्वर	१४ पद्म
३ वायु पुराण	९ शुक्र	१५ देव
४ शिव धर्म	१० वरुण	१६ पाराशर
५ दुर्वासा	११ साम्ब	१७ मरीचि
६ कपिल	१२ कल्कि	१८ भास्कर

जब कि अन्य विद्वान इनके अतिरिक्त निम्न पुराणों को भी उपपुराणों में गिनते हैं–

आत्म पुराण, देवी भागवत, महा भागवत, युग पुराण, वायु पुराण, सौर पुराण, केदार कल्प पुराण।

इससे यह भी प्रगट है कि कुछ पुराणों ने जहाँ वायु व नृसिंह पुराणों को मुख्य पुराणों में माना है वहाँ कुछ ने उनको उपपुराणों में

परिगणित किया है। केदार कल्प पुराण को जहाँ कुछ पौराणिक विद्वान् उपपुराणों में भी नहीं गिनते हैं, वहाँ वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई तथा चौखम्भा संस्कृत सीरीज के विद्वान् उसे उपपुराण मानते हैं। पुराण एवं उपपुराणों की संख्या में भी इतना गोलमाल है कि यह भी निर्णय करना कठिन है कि कौन पुराण मुख्य पुराण है व कौन उपपुराण है। विशेषता यह है कि सभी पर यह लिखा मिलता है कि वे 'व्यासकृत' हैं।

व्यास जी से तात्पर्य उन महर्षि वेदव्यास जी से लिया जाता है जो महाभारत काल में थे तथा जिन्होंने नियोग करके पाण्डु-कुरु और विदुर को जन्म दिया था, जो स्वयं सत्यवती के गर्भ से पाराशर ऋषि द्वारा उत्पन्न हुए थे तथा जिनको कृष्ण द्वैपायन व्यास भी कहा जाता है। वर्तमान में जो पुराण ग्रन्थ उपलब्ध हैं उन्हें देखकर तो यह मानना सम्भव नहीं है कि इनके रचियता श्री वेदव्यास जी थे। यह बात यदि कही जावे कि श्री वेदव्यास जी ने जो पुराण बनाये थे उनमें केवल १२००० श्लोक मात्र थे तथा उनमें पुराणों के मान्य विषय के अनुसार निम्न लक्षण मिलते थे—

पुराण का लक्षण

सर्गश्च प्रति सर्गश्च वंशो मन्वन्तराणिच।
वंशानुचरितञ्चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

अर्थ—सृष्टि का वर्णन, पुनः सृष्टि और प्रलय, पूर्व के सब मन्वन्तरों का अधिपत्य काल व वंशावलियाँ, राजाओं की वंशावलियाँ यह उपलब्ध होते हों।

व्यास जी के काल तक का वर्णन उन पुराणों में होगा, पर बाद को भविष्य पुराण के अनुसार लोगों ने नाना प्रकार के उपाख्यान उनमें जोड़कर उन पुराणों को इतना विस्तृत कर दिया कि तब उनका

सही स्वरूप क्या था यह निर्णय करना कठिन है। बारह हजार श्लोक वाले ग्रन्थों में तीन लाख अट्ठासी हजार श्लोक मिलाकर मध्य-कालीन पण्डितों ने मूल ग्रन्थों का स्वरूप ही नष्ट कर डाला है। यदि यह बात मान ली जावे तो पुराणों पर हमारा विवाद बहुत कुछ समाप्त हो जावे। किन्तु दुःख है कि अन्धविश्वासी पौराणिक विद्वान लोग इस बात को न मानकर वर्तमान पुराणों को इसी रूप में बनाने का दोष श्री वेदव्यास जी पर ही मढ़ते हैं। अतः यहाँ हम पुराणों की कुछ अन्तः साक्षियों के द्वारा इस पर विचार करते हैं कि पुराणों का रचनाकाल क्या हो सकता है ? उनके बनाने वाले कौन लोग थे ?

भारत के ऐतिहासिक शोधकर्ता विद्वानों ने पुराणों के बारे में शोध करके यह निष्कर्ष निकाला है कि उनका रचना काल लगभग गुप्तकाल के आसपास से प्रारम्भ होता है। भाषा-विज्ञान के विद्वानों ने भी ऐसा ही माना है कि पुराणोक्त संस्कृत एवं उनकी शैली गुप्तकाल के आसपास की शैली से मेल खाती है। पुराणों में जैन व बौद्ध धर्म का बहुधा वर्णन मिलता है। उससे भी यह सिद्ध होता है कि उनका रचना काल उस समय का है जब कि जैन व बौद्ध धर्म का इस देश में प्रसार हो रहा था। यह सर्व विदित है कि महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी का समय समकालीन था तथा वह अब से २५०० वर्ष पूर्व था। अब हम पुराणों में से बौद्ध व जैन धर्म का वर्णन उपस्थित करते हैं—

पुराणों में जैन व बौद्ध धर्म का वर्णन

शिव पुराण रुद्र सं० युद्ध खं० अ० १६ श्लोक ११ में लिखा है—

नमस्ते गूढ़देहाय वेदा निन्दा कराय च।
योगाचार्याय जैनाय बौद्धरूपाय मापते ।।

इस श्लोक में जैन व बौद्ध का वर्णन स्पष्ट है।

मत्स्य पुराण अ० २४ श्लोक ४७ में लिखा है—

गत्वाथ मोहयामास रजि पुत्रान् बृहस्पतिः ।
जिन धर्मं समास्थाय वेद वाह्यं सवेदवित् ॥४७॥

अर्थात्—बृहस्पति जी ने वेद विरुद्ध जैन धर्म का प्रचार किया।

स्कन्द पुराण माहेश्वर खण्ड के कौमार खण्ड अ० ३७ श्लोक ५७ में लिखा है।

नाभे पुत्रश्च ऋषभ ऋषभांद्भरतो भवत् ।
तस्यनाम्नात्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते ॥

अर्थात्—नाभिराजा के पुत्र ऋषभ भरत कहलाये। उनके नाम पर इस देश को भारत कहा गया।

लिंग पुराण पूर्वार्ध अ० ४७ में लिखा है—

नाभेर्निसर्गं वक्ष्यामि हिमांकेस्मिन्निबोधत ।
नाभिस्त्वजनयत्पुत्रं मेरुदेव्यां महामतिः ॥१६॥
ऋषभं पार्थिव श्रेष्ठं सर्व क्षत्रस्य पूजितं ।
ऋषभाद्भरतो यज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः ॥२०॥

अर्थात्—नाभि राजा की पत्नी मेरुदेवी से ऋषभदेव नाम का पुत्र पैदा हुआ इत्यादि।

स्कन्द पुराण काशीखण्ड अ० ३७ श्लोक ७७ में लिखा है—

गजवाजि वृषाकाराः करे वामे मृगी दशाम् ॥७६॥
रेखाः प्रसाद वज्राभा ब्रूयुस्तीर्थंकरं सुतम् ॥७७॥

अर्थात्—औरतों के बाँये हाथ में घोड़ा बैल-हिरणी मकान तथा वज्राकार लकीरें तीर्थंकर पुत्र को बताती हैं।

इसमें आया तीर्थंकर शब्द जैन धर्म के तीर्थंकरों का वाची है।

उर्दू पढ़ने व जैन मन्दिर में जाने का निषेध—

नवदेद्यावनी भाषां प्राणौः कण्ठ गतैरपि ।
गजैरापीड्य मानोऽपि न गच्छेज्जैन मन्दिरम् ॥५३॥

(भविष्य पुराण प्रति सर्ग खं० ३ अ० २८)

अर्थात्—चाहे प्राण गले में आ जावें पर उर्दू न बोले, मस्त हाथी से कुचल जाने का भी भय हो पर रक्षा को जैन मन्दिर में न जावे।

जैन मत निन्दा

जैन धर्मं समाश्रित्य सर्वे पाप प्रमोहिता ।
वेदाचारं परित्यज्य पापं यास्यन्ति मानवाः ॥२६॥

पापस्य मूलमेवं वै जैन धर्मो न संशयः ।
अनेन मुग्धा राजेन्द्र महामोहेन पातिताः ॥२७॥

(पद्म पु० भूमि खण्ड २ अ० ३८ कलकत्ता)

भावार्थ–जैन धर्म सारे पापों से भरा हुआ है। लोग उससे मोहित होकर वेद धर्म के आचार को त्यागकर उसे ग्रहण कर लेते हैं, वे सब पापी हो जाते हैं। इसमें संशय नहीं है कि जैन धर्म पापों की जड़ है। हे राजेन्द्र ! जो इस पर मुग्ध हो जाते हैं वे पतित हो जाते हैं।

जैन धर्म की व्याख्या

अर्हन्तो देवता यत्र निर्ग्रन्थो दृश्यते गुरुः ।
दया चैवपरो धर्मस्तत्र मोक्षः प्रदृश्यते ॥१७॥

दर्शनेऽस्मिन्न संदेह आचारान्प्रवदाम्यहम् ।
यजनं याजनं नास्ति वेदाध्ययनमेव च ॥१८॥

नास्ति संध्या तपो दानं स्वध्वा स्वाहा विवर्जितम् ।
हव्य कव्यादिकं नास्ति नैव यज्ञादिका क्रिया ॥१६॥
पितृणां तर्पणं नास्ति नातिथिर्वैश्वदेविकम् ।
क्षपणस्य वरापूजा अर्हतोध्यानमुत्तमम् ॥२०॥
अयं धर्म समाचारो जैन मार्गे प्रदृश्यते ।
एतत्ते सर्वं माख्यातं जैन धर्मस्य लक्षणम् ॥२१॥

(पद्म पु० २ भूमि खण्ड अ० ३७ कलकत्ता)

भावार्थ—जैन धर्म में तीर्थंकरों को देवता एवं निर्ग्रन्थ गुरु माने जाते हैं, जहाँ दया को ही परम धर्म एवं मोक्ष का मार्ग माना जाता है। जिसका दर्शन सन्देहजनक है उसका आचार मैं बतलाता हूँ। जैन धर्म में यज्ञादि, वेद का पढ़ना, सन्ध्या, तप, दान, हवन, श्राद्ध यज्ञादि क्रिया, पितरों का तर्पण, अतिथि पूजा आदि कुछ भी नहीं हैं। जैन धर्म में जैन साधुओं की पूजा तथा तीर्थंकरों का ध्यान ही उत्तम माना गया है। जैन धर्म का यही सन्देशा समाचार है और यही जैन मत का लक्षण है।

बौद्ध धर्म

दृष्टार्थं प्रत्यय करान्देह सौख्यैक साधकान् ।
बौद्धागमविनिर्दिष्टान्धर्मान्वेद परांस्ततः ॥३५॥

(शिव पुराण रुद्र सं० यु०खं० अ० ५)

अर्थ—प्रत्यक्ष अर्थ में ही विश्वास होना चाहिये, यही एक मात्र देह सुख का साधक है। यह धर्म वेद से परे बौद्ध शास्त्रों में निर्दिष्ट हुए हैं।

बौद्ध धर्म निन्दा

बलिता प्रेषितो भूमौ मयः प्राप्तो महासुरः ।
शाक्यसिंह गुरुर्गेयो बहुमाया प्रवर्तकः ।।३०।।
स नाम्ना गौतमाचार्यो दैत्य पक्ष विवर्धनः ।
सर्व तीर्थेषु ते नैव यन्त्राणि स्थापितानि वै ।।३१।।
तेषामधोगता येतु वै बौद्धाश्चासन्समन्ततः ।
शिखा सूत्र विहीनाश्च बभूवुर्वर्णसंकरा ।।३२।।
दश कोट्यः स्मृता आर्या बभूव बौद्ध मार्गिणाः ।।३३।।

(भविष्य पु० प्रतिसर्ग पर्व ४ अ० २१)

भावार्थ—बलि ने पृथ्वी पर एक बहुत माया प्रवर्तक महान् असुर को भेजा जो शाक्यसिंह के नाम से विख्यात् हुआ । उसे गौतम आचार्य भी कहते थे । वह दैत्यों के पक्ष को बढ़ाने वाला था । उसने सभी तीर्थों में अपनी संस्था स्थापित की । जो लोग उसके मतानुयायी बौद्ध बने वे चोटी जनेऊ से हीन एवं नीच गति को प्राप्त होकर वर्ण-संकर हो गये । दस करोड़ आर्य बौद्ध मार्ग के अनुगामी हो गये ।

श्री मद्भागवत पुराण में स्कन्द १ अ० ३ व स्कन्द ३ अ० ७ में दो सूचियाँ अवतारों की दी हैं । दोनों में ऋषभदेव, जो जैन तीर्थंकर माने जाते हैं तथा बुद्ध जी जो बौद्ध धर्म प्रवर्तक थे, इन दोनों को सनातनी अवतारों में माना गया है ।

यथा—

बुद्ध जी

ततः कलौ संप्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषाम् ।
बुद्धो नाम्ना जिन सुतः कीकटेषुभविष्यति ।।२४।।

(श्रीमद्भागवत पु० स्क० १ अ० ३)

अर्थ---कलियुग के आने पर असुरों को मोहने के लिये बुद्ध नाम से अवतार जिन सुत कीकट देश में होगा।

ऋषभदेव जी—

अष्टमे मेरु देव्यां तु नाभेर्जात उरुक्रमः।
दर्शयन्वर्त्म धीराणां सर्वाश्रमनमस्कृतम् ॥१३॥

अर्थ---ऋषभदेवजी आठवीं बार नाभि राजा की पत्नी मरुदेवी के गर्भ से प्रगट हुए, उन्होंने धीरों को सबसे नमस्कार करने योग्य (वन्दनीय) आश्रम दिखाया।

पद्म पुराण सृष्टि खण्ड अ० १३ में भी बौद्ध व जैन धर्म का वर्णन आता है इसी प्रकार अन्य पुराणों में भी इन धर्मों का उल्लेख मिलता है। विस्तारभय से हम सारे प्रमाणों को यहाँ नहीं देते हैं।

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि पुराणों का रचना काल जैन व बौद्ध धर्म की स्थापना के पश्चात् का है। इसीलिये पुराणों में कहीं इन मतों की प्रशंसा है तो कहीं इनकी निन्दा की गई है। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि वेद विरोधी इस नास्तिक बुद्ध मत के प्रवर्तक बुद्ध जी को भी हिन्दुओं ने अपने विष्णु के अवतारों की सूची में सम्मिलित कर लिया है, जब कि सैद्धातिक विरोध होने से उनका बहिष्कार किया जाना चाहिये था।

अठारह पुराणों में भविष्य पुराण का भी एक प्रमुख स्थान माना जाता है। उसमें हमको निम्न प्रकार भारत की ऐतिहासिक घटनाओं एवं पुरुषों का वर्णन मिलता है=-

पुराणों में इतिहास

ईसामसीह—ईशपुत्र चमां विद्धि कुमारी गर्भ संभवम् ।२३।
ईसामसी च दस्यूनां प्रादुर्भूता भयंकरी।

तामहं म्लेक्षतः प्राप्य मसीहत्व मुपागतः ॥२६॥
(अ० २)

मोहम्मद साहब—महामद इतिख्यातः शिष्य शाखा समन्वितः ।५।
मुसलमान —

लिङ्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी सदूषकः ।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्य जनो मम ॥२५
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्म दूषकः ।२७।
(अ० ३) प्रतिसर्ग पर्व खं० ३

सिकन्दर—सुकन्दरो म्लेक्षपतिः सदा मद्वर्द्धनेरतः ।४६।
(अ० ३) (प्रतिसर्ग पर्व खं० ४)

तैमूरलंग—सतस्तिमिरलिंगस्य सरुषोनाम विश्रुतः ।२।
(अ० ४)

बाबर—पंचवर्ष कृतं राज्यं तत्सुतो बाबरभवत् ।४।
हुमायूँ—होमायुषा मदान्धेन देवताश्च निराकृताः ।५।
अकबर—अतः साकबरो नाम होमायुस्तनयस्तव ।१४।
केशव-तानसेन--केशवो गानसैनश्च वैज वाक्य तु माधवः ।२१।
बीरबल—पूर्व जन्मनि देवापिः स च बीरबलोऽभवत् ।२२।
तुलसीदास—विख्यातस्तुलसी शर्मापुराण निपुणाः कविः ।२८।
सूरदास —सूरदास इति ज्ञेयः कृष्ण लीला करः कविः ।३०।
चरणदास—वर्द्धनश्च सवै जातो नाम्ना चरणदासकः ।

रैदास—ज्ञानमालामयं कृत्वा ग्रन्थं रैदास मार्गगः ।३६।
मीरा—मीरा नामेति विख्याता भूपते स्तनया शुभा ।४१।
सलीम—सलोमा तनयस्तस्य कृतं राज्यं पितु समम् ।
शिवाजी—सेवाजयो नाम नृपो देवपक्ष विवर्धनः ।५१।
महाराष्ट्र द्विजस्तस्य युद्ध विद्या विशारदः ।५२।
नादिरशाह—तद्राष्ट्रे नादरो नामदैत्यो देश उवागमत् ।५८।
अंग्रेज आये—विकटान्वयसंभूता गुरुण्डा वानराननाः ।
वाणिज्यार्थं मिहायाता गौरुण्डा बौद्ध मार्गिणाः ।७२।
कलकत्ता राजधानी—नगर्य्यां कल्विकातायां स्थापयामा सहृद्यताः ७५।
वार्डिलो—त्रागदण्डैस्स चभूपालो वार्डिलो नाशमाप्तवान् ।
लार्ड बेकल—गुरुण्डे नवमः प्राप्तो भेकलो नाम वीर्यवान् ।८५।

(भविष्य प्रतिसर्ग पर्व खं० अ० २२)

पुराणों में उपरोक्त व्यक्तियों एवं अंग्रेजों के भारत आकर कलकत्ता को राजधानी बनाने व राज्य करने, लार्ड बेकल व वार्डिली तक का उल्लेख होने पर अब कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो पुराणों को महाभारतकालीन व्यासजी कृत मानने को उद्यत होगा। यदि इनको भविष्य का वर्णन बताया जावे तो फिर तैमूरलंग, नादिर शाह,बाबर,अकबर का ही वर्णन क्यों किया गया, उनमें महात्मागांधी-तिलक-महर्षि दयानन्द-सरदार पटेल-जवाहरलाल नेहरू-भारत की स्वतन्त्रता-पाकिस्तान बनने व चीनी आक्रमण का उल्लेख क्यों नहीं किया गया ? क्या पाकिस्तान में हिन्दुओं का कत्लेआम,भारत की

स्वतन्त्रता, रियासतों के राष्ट्रीयकरण की घटनायें तैमूरलंग व नादिर-शाह के आक्रमणों से भी कम महत्व की थीं ? वास्तविक बात यह है कि इन पुराणों की रचना उस समय तक होती रही है जब तक की घटनाओं का वर्णन उनमें मिलता है। अतः यह दावा सही नहीं माना जा सकता है कि यह पुराण द्वापर के अन्त में व्यासजी ने अबसे प्रायः ५००० वर्ष पूर्व बनाये थे। हाँ, यदि व्यास शब्द का अर्थ कृष्ण द्वैपायन व्यासजी से न लेकर उन व्यासों का लिया जावे जो जनता में कथायें सुनाया करते थे, और यह माना जावे कि इन पुराणों को इन्हीं अनेक व्यासों ने समय-समय पर बनाया है तब भी कुछ संगति लग सकती है। क्योंकि अब तक भी कथा कहने वालों को व्यास तथा जिस गद्दी पर बैठकर वे कथा कहते हैं उसे व्यास-गद्दी कहा जाता है।

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि पुराणों का रचना काल जैन व बौद्ध धर्म के उदय के पश्चात से लेकर भारत में अंग्रेजी शासन स्थापित होने के पश्चात् तक रहा है। वर्तमान स्वरूप में पुराण महाभारत कालीन वेदव्यास जी की रचनायें सिद्ध नहीं होती हैं। यही क्यों, पुराणों के अन्दर जो परस्पर विरोधी वर्णन, देवताओं की निन्दा व स्तुतियाँ दी गई हैं उनसे भी यह बात प्रकट होती है कि पुराण ग्रन्थ किसी भी एक व्यक्ति की रचनायें नहीं हैं। हम इस विषय में भी कुछ प्रमाण आगे उपस्थित करते हैं।

शिव प्रशंसा

सौर पुराण अ० ४१ में शिवजी के बारे में लिखा है—

अग्रगण्यः सदाचारः सर्वः शम्भुर्महेश्वरः ॥१२॥
ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ॥१०६॥

अर्थात्—शिवजी सम्पूर्ण सदाचारियों में अग्रगण्य (सर्व श्रेष्ठ) व्यक्ति थे। वे ब्रह्मचारी, लोक के व्यवहार को जानने वाले, धर्मानुकूल आचार रखने वाले एवं सम्पूर्ण धन ऐश्वर्य के स्वामी थे।

शिवपुराण कोटिरुद्र सं० अ० ३५ श्लोक ३२ में शिवजी को लिखा है कि वे—

'जितकामो' अर्थात् कामदेव को जीतने वाले थे।

मुक्तेर्दाता मुनिश्रेष्ठाः केवलं शिव उच्यते।
ब्रह्माद्या नहि ते ज्ञेया केवलं च त्रिवर्गदा; ॥

(शिव पु० कोटि रु० सं० अ० ४१)

अर्थ—मुक्ति के देने वाले तो केवल शिवजी ही कहे हैं। ब्रह्मा विष्णु आदि मुक्ति दाता नहीं हैं। वे तो केवल त्रिवर्ग (अर्थ-धर्म व काम) के ही देने वाले हैं।

अतोऽधिको न देवो न देवोऽस्ति मुक्ति प्राप्त्यै च शंकरात्।
शरणं प्राप्य यच्चैव संसाराद्विनिवर्तते ॥३७॥

(शिव पु० कोटि रु० सं० अ० ४३)

अर्थ—उन शंकर जी से अधिक कोई देवता मुक्ति के प्राप्त होने के निमित्त नहीं है, जिनकी शरण में आके संसार से छूट जाते हैं।

अनन्यया च भक्त्या वै युक्तः शम्भुं भजेत्पुनः।
अन्ते च मुक्ति मायाति नात्र कार्या विचारणा ॥३६॥

(शि० को० रु० सं० अ० ४३)

अर्थ—जो मनुष्य अनन्य भक्ति के साथ शिवजी का भजन करता है उसकी अन्त में अवश्य मुक्ति हो जाती है, इसमें संशय नहीं करना चाहिये।

शिवजी की निन्दा

पार्वती जी ने शिवजी के बारे में बतलाया है—

एष स्त्री लम्पटो देवो ॥३१॥

(मत्स्य पुराण अ० १५४)

अर्थ—यह शिव पर-नारियों का लम्पट देवता है, अर्थात् महा व्यभिचारी है।

शंभोः पपात भुवि लिङ्ग मिदं प्रसिद्धं,
शापेन तेन च भृगोर्विपिने गतस्य।
तं ये नराः भुवि भजंति कपालिनं तु,
तेषां सुखं कथमिहापि परत्र मातः ॥१६॥

(देवी भागवत स्कन्द ५ अ० १६)

अर्थ–जिस शिव का लिंग (उपस्थेन्द्रिय) दारुवन में जाने व व्यभिचार करने के कारण भृगु के शाप से कटकर गिर गया, जो कि प्रसिद्ध घटना है, उस शिव की भक्ति जो लोग करेंगे, हे माता ! उनको सुख कैसे मिलेगा ? अर्थात् दुःख ही मिलेगा।

पाषण्डैः पूज्यमानस्तु लिंग रूप धरः शिवः।

(पद्म पु० उ० खं० अ० २५५ कलकत्ता)

अर्थ—लिङ्ग रूपी शिव की पूजा पाखण्डियों में ही मान्यता प्राप्त करेगी।

अनर्हमम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं तथा।
मह्यं निवेद्य सकलं कूप एवं विनिक्षिपेत् ॥

(पद्म पाताल खं० ४ अ० ११४ श्लोक २०५)

अर्थ—शिवजी कहते हैं-मेरे नैवेद्य-पत्र-पुष्प-और फल को कोई भी ग्रहण करने योग्य नहीं है। मेरे ऊपर चढ़ाया मानो कुंए में फेंक देना है।

ब्रह्मा विष्णु स्तथा रुद्रस्ते चाऽहंकार मोहिताः।३७।
भ्रमन्त्यस्मिन्महागाधे ससारे नृपसत्तम।३८।

(देवी भाग० ४।७)

अर्थ—ब्रह्मा-विष्णु तथा महादेव ये लोग अहंकार से मोहित होकर अगाध संसार सागर में गोते खाते रहते हैं।

शिवस्याऽपि मृता भार्या सती दग्ध्वा कलेवरम् ।
सोऽभव दुःख संतप्तः कामार्तश्च जनार्तिहा ॥३४॥
कामार्त्तो रममाणस्तु नग्नः सोऽपि भृगोर्वनम् ।
गतः प्राप्तोऽथ भृगुणशप्तः कामातुरो भृशम् ॥३६॥
पतत्वद्यैव ते लिंगं निर्लज्जेति भृशं किल ॥३७॥

(देवी भाग० ४।२०)

अर्थ—शिव भी अपनी पत्नी सती के मर जाने पर उसकी लाश को लेकर अत्यन्त कामार्त एवं दुःखी हुए थे। नग्न एवं कामातुर होकर वे भृगु के वन में गये। वहाँ उस कामातुर को भृगु ने शाप दिया और उसी शाप से उस निर्लज्ज शिव का लिंग कट कर गिर गया था।

ब्रह्मा जी की प्रशंसा

पुराणं सर्व शास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम् ।
नित्यं शब्दमयं पुण्यं शतकोटि प्रविस्तरम् ॥३॥
अनन्तरञ्च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिःसृताः ॥४॥

(मत्स्य पुराण अ० ३)

चतुर्मुखः स भगवानभूल्लोक पितामहः ॥३६॥
येन सृष्टं जगत्सर्वं सदेवासुर मानुषम ॥३७॥

(मत्स्य पु० अ० २)

अर्थ—ब्रह्मा जी ने सब शास्त्रों में सबसे प्रथम पुराणों को बनाया। उसके बाद उनसे वेद प्रगट हुए थे। चतुर्मुख वाले भगवान

ब्रह्मा इस भूलोक के पितामह हैं जिन्होंने देव और मनुष्यों को एवं सारे जगत को उत्पन्न किया है।

इतने बड़े देवता ब्रह्मा जिसने वेदों-पुराणों-देवताओं व मनुष्यों तथा सारे जगत को बनाया हो उसके बारे में कोई यह सोच भी नहीं सकता है कि वह निन्दित कर्म भी कर सकेगा। किन्तु पुराणों ने इन ब्रह्मा जी पर भी आरोप लगाया है।

ब्रह्मा जी की निन्दा

वेदकर्ता जगद्धर्ता बुद्धिदस्तु चतुर्मुखः।
सोऽपि विक्लवतांप्राप्तो द्रष्ट्वा पुत्रीं सरस्वतीम् ॥३३॥

(देवी भाग ४।२०)

अर्थ--वेद का बनाने वाला, जगत का रचयिता महा बुद्धिमान चार मुँह वाला ब्रह्मा भी अपनी ही बेटी सरस्वती को देखकर कामदेव से विकल हो गया।

हरिर्ब्रह्मा शचीकान्तस्तथान्ये सुर सत्तमाः।
सर्वे छल विधौ दक्षा मनुष्याणां चका कथा॥

(देवी भाग० ४,१३,१०)

अर्थ--विष्णु-ब्रह्मा-इन्द्र तथा अन्य सारे देवता गण सबके सब छल कपट करने में दक्ष (Expert) हैं तब बिचारे मनुष्यों की क्या कथा है ?

ब्रह्माच बहुवारंहि मोहितः शिवमायया।
अभवद्भोक्तु कामश्च स्वसुतायां परासु च॥

(शिव० उमा० अ० ४२ श्लोक २७)

अर्थ—ब्रह्मा जी ने अनेक बार शिवजी की माया से मोहित होकर आसक्त हुई अपनी पुत्री से भोग करने की इच्छा की।

विष्णु जी की प्रशंसा

सर्ग स्थिति विनाशानां जगतो यो जगन्मयः।
मूलभूतो नमस्तस्मै विष्णवे परमात्मने ॥

अर्थ—जो विश्व रूप प्रभु विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के मूल कारण हैं, उन परमात्मा विष्णु भगवान को नमस्कार है।

भौमं मनोरथं स्वर्गं स्वर्गिवन्द्यं यत्पदम्।
प्राप्नोत्याराधिते विष्णौ निर्वाणमपि चोत्तमम् ॥६॥
(विष्णु पु० ३,८,६)

अर्थ—भगवान विष्णु की आराधना करने से मनुष्य भूमण्डल सम्बन्धी समस्त मनोरथ, स्वर्ग, स्वर्गलोक निवासियों के भी वन्दनीय ब्रह्मपद और परम निर्वाण पद को भी प्राप्त कर लेता है।

विष्णु निन्दा

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं,
मीनोबभूव कमठः खलु सूकरस्तु।
पश्चात्नृसिंह इति यच्छल कृद्धरायां,
तान्सेवतां जननि मृत्यु भयं न किं स्यात् ॥१८॥
(देवी भागवत स्कन्द ५ अ० १९)

अर्थ—जिस विष्णु ने भृगु के शाप के कारण मछली-कछुआ-सुअर और नृसिंह के अवतार धारण किये और पीछे वामन बनकर संसार में छल किया, इस विष्णु की (या उसके अवतारों की) जो भक्ति करेंगे उनको क्यों नहीं मृत्यु का भय अर्थात दुःख मिलेगा ?

... विरजानन्द ...
पुस्तक परिग्रहण क्रमांक 2874
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

महेशस्यैव दासोऽयं विष्णुस्तेनानुकम्पितः ।

(सौर पु० अ० ४०-५)

अर्थात्—विष्णु तो शिवजी का नौकर है ।

सर्व देव निन्दा

किं विष्णुः किं शिवो ब्रह्मा मघवा किं बृहस्पतिः ।
देहवान् प्रभवत्येव विकारैः संयुतस्तदा ॥१५॥
रागी विष्णु शिवो रागी ब्रह्मापि राग संयुतः ।
रागवान्कि कृत्यं वै न करोति नराधिपः ॥१६॥

(देवी भाग० ४, १३)

अर्थ—विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र-बृहस्पति कोई भी क्यों न हो, देहधारी होने से सब विकारों से युक्त हैं । विष्णु-शिव-ब्रह्मा ये सभी रागी हैं, और हे राजन् ! रागी व्यक्ति कौन-सा (कर्म-कुकर्म) नहीं करता है ?

ये वास्तुवन्ति मनुजा अमरान् विमूढ़ाः ।
माया गुणैस्तव चतुर्मुख विष्णु रुद्रान् ॥
शुभांशु वन्हियम वायु गणेश मुख्यान् ।
किं त्वामृते जननि ते प्रभवन्ति कार्ये ॥

(देवी भाग० ५,१९,६)

अर्थ—जो लोग आपके मायाजाल में फँसकर देवता अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु-शिव-चन्द्रमा-अग्नि-यम-वायु गणेश जिनमें मुख्य हैं, उन देवताओं की पूजा करते हैं वे सभी मूर्ख हैं । क्या तेरी (देवी की) शक्ति के बिना ये देवता कुछ भी कर सकते हैं ?

गणेश प्रशंसा

त्रिदेव बोले—

गणेशो विघ्नहर्ता हि सर्व काम फलप्रदः ॥२२॥
एतत्पूजांपुरा कृत्वा पश्चात्पूज्या वयं नरैः २३॥

(शिव पु० रु० सं० कुमार खंड अ० १८)

अर्थ—तीनों देवता (ब्रह्मा-विष्णु व महादेव) बोले—गणेश जी विघ्नों के नाश करने वाले तथा सर्व मनोरथ पूर्ण करने वाले होंगे। पहिले इनकी पूजा मनुष्यों द्वारा होगी उसके पश्चात् हम लोग पूजे जाया करेंगे।

गणेश निन्दा

योऽभूद् गजानन गणाऽधिपतिर्महेशात्,
तं ये भजन्ति मनुजा वितथप्रपन्नाः।
जानन्ति ते न सकलार्थ फल प्रदात्रीं,
त्वांदेवि विश्व जननीं सुख सेवनीयाम् ॥

(देवी भागवत ५,१९,२०,)

अर्थ—जो गणेश महादेव जी से पैदा हुआ है, उसको जो मूर्ख लोग भक्ति करते हैं वे बुद्धिहीन लोग हे विश्व जननी एवं सकल फल देने वाली माता ! तुझको नहीं जानते हैं कि तू ही सुखों के लिये सेवन करने योग्य है।

इन्द्र-अग्नि-चन्द्रमा-ब्रह्मा की निन्दा

इन्द्रोऽग्निश्चन्द्रमविधाः परदारा भिलम्पटाः।

(देवी भाग० ४,१३,१३)

अर्थ—इन्द्र-अग्नि-चन्द्रमा-ब्रह्मा सभी पर नारियों के लम्पट हैं।

देवता व ऋषियों की निन्दा

अमराणां गुरुः साक्षान्मिथ्यावादी स्वयं यदि ।
तदा कः सत्य वक्ता स्वाद्राजसस्तामसः पुनः ॥८॥
हरिर्ब्रह्मा शचीकान्तस्तथाऽन्ये सुरसत्तमाः ।
सर्वे छल विधौ दक्षा मनुष्याणां च का कथा ॥१०॥
काम क्रोधाभि संतप्ता लोभो पहत चेतसः ।
छले दक्षाः सुराः सर्वे मुनयश्च तपोधनाः ॥११॥
वसिष्ठो वामदेवश्च विश्वामित्रो गुरुस्तथा ।
एते पाप रताः काऽत्र गतिर्धर्मस्यमानद ॥१२॥

(देवी भाग ४,१३)

अर्थ—देवताओं के गुरु ही जब साक्षात् झूठ बोलने वाले हैं तो राजस व तामस गुणों से युक्त और कौन सत्यभाषी होगा ? विष्णु-ब्रह्मा-इन्द्र तथा अन्य देवता सभी छल करने में दक्ष हैं तो मनुष्यों का फिर क्या कहना ? काम-क्रोध-लोभ से अभिभूत एवं छल कपट करने में सारे देवता तथा तपोनिधि मुनि-वशिष्ठ-वामदेव-विश्वामित्र-बृहस्पति सभी निपुण हैं, सभी पापों में रत हैं तो फिर राजन्, धर्म की क्या गति होगी ?

वशिष्ठ ऋषि का अपमान

गणिका गर्भ संभूतो वशिष्ठश्चो महामुनिः ।

अर्थ—वशिष्ठ जी रण्डी की औलाद थे ।

उल्लू से कणादि ऋषि

उल्लूकी गर्भ सम्भूतः कणादाख्यो महामुनिः ।

अर्थ—कणाद ऋषि उल्लू के गर्भ से पैदा हुए थे ।

शृङ्ग ऋषि हिरनी से

हरिणी गर्भ संभूतः ऋष्य शृंगो महामुनिः ।

अर्थ—हिरनी के गर्भ से ऋषि शृङ्ग पैदा हुए थे ।

माण्डव्य मुनि मेंढकी से

माण्डव्यो मुनि राजस्तु मण्डूकी गर्भ संभवः ।

शुकदेव जी तोती से व कणादि मुनि उल्लू से

शुक्याः शुकः कणदाख्यस्तथोलूक्या सुतोभवत् ।

(भविष्य पु० ब्राह्म पर्व अ० ४२)

अर्थ—मादा तोता से शुकदेवजी तथा कणाद ऋषि उल्लू के गर्भ से पैदा हुए थे ।

सभी पुराण बनाने वालों की निन्दा

प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे चकाले ।
नत्वां भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते ॥
धूर्तैः पुराण चतुरैः हरि शंकराणाम् ।
सेवा पराश्च विहिता स्तव निर्मितानाम् ॥१२॥

अर्थ—हाय ! हाय ! ऐसे कराल कलिकाल के आजाने पर भी (वैष्णव-शैव-गाणपत्य-सौर सम्प्रदायानुरागी होकर) आपकी पूजा नहीं करते । इससे स्पष्ट है कि धूर्त पुराण रचयिताओं ने आपके बनाये विष्णु शंकर आदि देवताओं की आराधना में लगाकर उनको बड़ा धोखा दिया है ।

(देवी भागवत स्कन्द अध्याय १९—टीकाकार श्री मन्नालाल अभिमन्यु M. A. व प्रकाशक मास्टर खिलाड़ीलाल एण्ड संस कचौड़ी-गली बनारस सिटी)

इस श्लोक में 'धूर्तैः' पद बहुवचन में आया है। इससे प्रगट है कि पुराण बनाने वाले अनेक लोग हुए हैं। पुराणकार ने उन सभी को धूर्त बताकर उनकी घोर निन्दा की है।

नरक में ले जाने वाले पुराणों की सूची

पुराणानि च वक्ष्यामि तामसानि यथा क्रमात् ।१३।
मात्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवं स्कंदं तथैव च ।१७।
आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ।१८।
तथैव तामसा देवि नित्य प्राप्ति हेतवः ।२१।
तामसा नरकायैव वर्ज्ज येत्तानि विचक्षणः ।२६।

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अध्याय २३६ कलकत्ता)

अर्थ—मैं तामस पुराणों को यथाक्रम कहता हूँ। मत्स्य, कूर्म, लिङ्ग,शिव, स्कन्द, अग्नि इन पुराणों को तामस पुराण जानो। हे देवि ! यह तामस पुराण पाठकों को नरक में धकेलने के लिये हैं। इस लिये बुद्धिमानों को चाहिये कि वे इन तामस पुराणों का बहिष्कार कर देवें।" पद्म पुराण ने जहाँ उपरोक्त छः पुराणों को तामस व त्याज्य बताया है वहाँ भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व खण्ड ३ अ० २८ में लिखा है कि:—

"मार्कण्डेय, वाराह, अग्नि, लिङ्ग,ब्रह्माण्ड तथा भविष्य यह छः तामस पुराण हैं"—

इसका अर्थ यह हुआ कि कुल १८ पुराणों में से मत्स्य, कूर्म, लिंग,शिव,स्कन्द, अग्नि, मार्कण्डेय, वाराह, ब्रह्माण्ड, तथा भविष्य यह १० पुराण तो तामस पुराण हैं, और पद्म पुराण की व्यवस्था के अनुसार तामस पुराण होने से ये सभी नरक में ले जाने वाले हैं। अतः इनका तो पूर्णरूपेण बहिष्कार कर देना चाहिये। यह तो हाथ

से छूने के योग्य भी नहीं हैं। शेष रहे छः पुराण उनमें भी कुछ राजस हैं और तामस शास्त्र हैं। इस प्रकार पुराणों में पुराणों की घोर निन्दा दी हुई है।

पुराणों में ब्राह्मण निन्दा

पूर्वयो राक्षसा राजंस्ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः ॥ ४२ ॥
पाखण्ड निरताः प्रायो भवन्ति जन वंचकाः ।
असत्यवादिनः सर्वे वेदधर्म विवर्जिताः ॥ ४३ ॥
दाम्भिका लोक चतुरा मानिनोवेदवर्जिताः ।
शूद्रसेवापराः केचित् नानाधर्म प्रवर्तकाः ॥ ४४ ॥
वेद निन्दाकराः क्रूरा धर्मभ्रष्टातिवादकाः ॥ ४५ ॥
शूद्रधर्मरता विप्राः प्रतिग्रह परायणाः ॥ ४७ ॥

(देवी भागवत् ६।११)

अर्थ—हे राजन् ! पूर्वकाल में जो राक्षस थे वे ही कलियुग में ब्राह्मण पैदा हुए हैं। वे लोग पाखण्डों में तल्लीन रहते हैं और प्रायः लोगों को ठगने वाले होते हैं। वे सभी झूठ बोलने वाले वेद, धर्म से रहित, दम्भी, लोक व्यवहार में चतुर, बड़े अभिमानी, एवं वेद से रहित, शूद्रों की सेवा करने वाले, तरह-तरह के मतमतान्तर चलाने वाले, वेदों की निन्दा करने वाले, बड़े क्रूर, धर्म से सर्वथा भ्रष्ट, बड़े बकवादी, शूद्रों के धर्म में लगे रहने वाले एवं दान (पराये माल) पर निर्भर रहने वाले होते हैं।

कलौयुगे प्रवृत्ते तु कुम्भीपाकात्तु निर्गताः ॥ ६२ ॥
भुविजाता ब्राह्मणाश्च शापदग्धाःपुरा तु ये ।
संध्यात्रय विहीनाश्च गायत्री भक्तिवर्जिताः ॥ ६३ ॥

वेदभक्ति विहीनाश्च पाखण्डमत गामिनः ।
अग्निहोत्रादि सत्कर्म स्वधास्वाहा विवर्जिताः॥ ६४ ॥
मूल प्रकृतिमव्यक्तां नैव जानंति कर्हिचित् ।
तप्तमुद्रांकिताः केचित् कामाचार रताः परे ॥ ६५ ॥
कापालिका कौलिकाश्च बौद्धाः जैनास्तथापरे ।
पंडिताऽपिते सर्वे दुराचार प्रवर्तकाः ॥ ६६ ॥
लम्पटाः परदारेषु दुराचार परायणाः ।
कुम्भीपाकं पुनः सर्वेयास्यन्ति निज कर्मभिः ॥ ६७ ॥

(देवी भाग० १२ । ६)

अर्थ—पूर्वकाल में शापों से दग्ध हुए लोग कलियुग के आजाने पर कुम्भीपाक नामी नरक में से निकलकर ब्राह्मण बनकर आगये हैं। ये लोग तीनों काल की सन्ध्या से विहीन एवं गायत्री की भक्ति से रहित होते हैं। वेदों की भक्ति से विहीन, पाखण्ड मतों के मानने वाले, अग्निहोत्रादि सत्कर्मों से रहित होते हैं। मूल अव्यक्त प्रकृति को ये नहीं जानते हैं। तप्तमुद्रा (मौहर) से दागे हुए, विषय भोगों में तल्लीन, कापालिक, कौलिक, बौद्ध व जैन मतों को मानने वाले ये पंडित लोग सारे के सारे दुराचारों में प्रवृत्त रहते हैं। ये कलियुगी (पौराणिक) पण्डित लोग परनारियों के लम्पट, दुराचारों में लीन रहने वाले होते हैं। ये सब अपने कुकर्मों के कारण पुनः कुम्भीपाक नामी नरक में झोंक दिये जावेंगे।

विष्णु प्रशंसा व शिवादि अन्य देवों की निन्दा

ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो हरि रच्युतः ।
स एव पूज्यो विप्राणां नेतरः पुरुषर्षभः ॥ ६६ ॥

मोहाद्यः पूजयेदन्यं स पाखण्डी भविष्यति । १००॥
तस्माविष्णोः प्रसादो वै सेवितव्यो द्विजन्मनाम् ।
इतरेषांतु देवानां निर्माल्यं गर्हितं भवेत् ॥१०४॥
सकृदेवहि योऽश्नाति ब्राह्मणो ज्ञान दुर्बलः ।
निर्माल्यं शङ्करादीनां स चाण्डालो भवेध्रुवं ॥१०५॥

(पद्म पुराण उत्तर खं० अ० २५५ कलकत्ता)

अर्थ—ब्राह्मणों के लिए पुण्डरीकाक्ष विष्णुजी ही पूजनीय हैं, अन्य कोई देवता पूज्य नहीं हैं। मोह के वशीभूत होकर जो अन्य देवता को पूजते हैं वह चाण्डाल हो जावेंगे। इसलिए द्विजों के लिए केवल विष्णु का ही प्रसाद सेवनीय है। उनसे भिन्न देवता का प्रसाद गर्हित (त्याज्य) है। जो मूर्ख ब्राह्मण शङ्करादि अन्य देवता का प्रसाद खाता है वह निश्चय पूर्वक चाण्डाल हो जाता है।

विष्णु निन्दा तथा शिव व उनके निर्माल्य की प्रशंसा

शिवभक्तः शुचिः शुद्धः सद्व्रतीद्रढनिश्चयः ।
भक्षयेच्छिवनैवेद्यं त्यजेदग्राह्य भावनाम् ॥ ३ ॥
द्रष्ट्वापि शिवनैवेद्यं यांति पापानिदूरतः ।
भुक्ते तु शिव नैवेद्ये पुण्यान्या यांति कोटिशः ॥ ४ ॥
अलंयाग सहस्रेणाण्यलंयागार्बुदैरपि ।
भक्षिते शिव नैवेद्ये शिव सायुज्यमाप्नुयात् ॥ ५ ॥

(शिव पु० वि० सं० अ० २२)

अर्थ—शिव का भक्त पवित्र-शुद्ध-सद्व्रती द्रढ़ निश्चय शिवजी का नैवेद्य (परशाद) खाले, अग्राह्य भावना छोड़ दे। शिव नैवेद्य को

देखते ही पाप दूर से भाग जाते हैं, और उसके भक्षण करने से अनेक पुण्य प्राप्त होते हैं। सहस्र और अरब यज्ञ करने से क्या लाभ, शिव का प्रसाद खा लेने से शिव सायुज्य (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

यदि पाप रतः क्रूरा स्वाश्रमाचार वर्जितः।
वैष्णवानां सहस्रेभ्यः शिव भक्तो विशिष्यते ॥ ६ ॥

(सौर पुराण अ० ११)

अर्थ—पाप कर्मों में रत, क्रूर, कुकर्मी, अपने आश्रम धर्म से रहित हो तो भी ऐसा शैव हजारों वैष्णवों (विष्णु के भक्तों) से श्रेष्ठ होता है।

देवी के पैरों के तले में पाँच महाप्रेतों का वास

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
एते पञ्च महाप्रेताः पाद मूले मम स्थिताः ॥

(देवी भागवत् ७। ४०। १०)

अर्थ—देवी बोली–ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, ईश्वर और सदाशिव ये पाँचों महाप्रेत मेरे पैरों के तले में स्थित रहते हैं।

इन चन्द प्रमाणों को पुराणों से उपस्थित करके हमने यह दिखलाया है कि यदि पुराण ग्रन्थ व्यास आदि किसी भी एक व्यक्ति की रचना होते तो उनमें परस्पर विरोधी बातें, देवताओं की कहीं स्तुतियाँ व कहीं उनकी, ऋषियों व ब्राह्मणों की निन्दायें नहीं देखने में आतीं। अपितु इनसे यह सिद्ध हो जाता है कि ये पुराण, ग्रंथ भिन्न-भिन्न देवताओं के भक्तों द्वारा भिन्न-भिन्न काल में बनाये गये हैं। इसीलिए उनमें अलग-अलग अपने-अपने देवताओं की प्रशंसा तथा दूसरों के देवताओं तथा भक्तों की निन्दा की गई है। कलियुगी पौराणिक पण्डितों का तो नग्न चित्र खींचकर रख दिया गया है, उन्हें

साक्षात् राक्षसों का अवतार--नाना प्रकार के पाखण्डी मतों का प्रवर्तक—जनवंचक, मिथ्यावादी, छली, प्रपञ्ची, कुम्भीपाक नरक में से आने वाले व कुकर्मों के कारण पुनः उसी नरक में जाने वाले घोषित किया गया है। हम नहीं समझ सके कि जिन गन्थों में हमारे ब्राह्मण-वर्ग की इस प्रकार की घोर निन्दा व अपमान किया गया हो उनको धर्मशास्त्र व पूज्य ग्रंथ वे कैसे मानते हैं ? यदि पौराणिक विद्वानों में जरा भी स्वाभिमान शेष होता तो ऐसे ग्रन्थों के विरुद्ध सामूहिक आन्दोलन करके या तो उनका संशोधन कराते अथवा उन्हें सरकार द्वारा जब्त कराकर दम लेते। हमारा विचार है कि वे लोग कदाचित इसलिए खून का घूँट पीकर शान्त हो जाते हैं कि पुराणों ने उनकी जो वास्तविकता खोलदी है, यदि उन्होंने उसके विरुद्ध कोई शोर मचाया तो जनता यह कहेगी कि आखिर पुराणकारों ने गलत क्या लिखा है ? पुराण की बात सत्य होने से अदालतें भी उन्हीं का पक्ष लेने पर विवश होंगी और इन विद्वानों को वहाँ भी मुँह की खानी पड़ेगी।

पुराणकारों ने वशिष्ठ ऋषि को रण्डी से, माण्डव्य को मेंढकी से, ऋषिश्रृङ्ग को हिरनी से, वैशेषिक दर्शनकार महर्षिकणाद को उल्लू से, पैदा हुआ लिखा है। पशु पक्षियों से भी मनुष्य पैदा हो सकते हैं या नहीं, इस बात का परीक्षण पौराणिक विद्वानों को प्रत्यक्ष दिखाना चाहिए वरना जनता तो ऐसे ग्रन्थों के लेखकों को कोरा गप्पाष्टकी मानेगी। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह मानने को तैयार नहीं होगा कि महर्षि वेद व्यासजी जैसे प्रगाढ़ विद्वान की लेखनी से ऐसी मूर्खता-पूर्ण गल्पों वाले पुराण भी लिखे जा सकते हैं।

अब हम पुराणों की कुछ मनोरंजक कथाओं को प्रस्तुत करते हैं जिनको पढ़कर पाठक यह विचार सकेंगे कि ऐसी असम्भव बातों से युक्त पुराण ग्रन्थ महर्षि वेद व्यासजी कृत हो सकते हैं या नहीं ? सर्व-प्रथम हम नर बलि, पशु बलि एवं श्राद्ध में मांस भक्षण के चन्द प्रमाण उपस्थित करते हैं।

पुराणों में पशु बलि का आदेश

कर्तव्येयं महा पूजा नानाबलि भिरादरात् ।
छाग मेषादिमहिषैः सामिषान्नैस्तथैव च ॥१६॥

(महाभागवत अ० ४६)

अर्थात्—दुर्गा की पूजा बकरा, भेड़-भैंसा आदि के गोश्त तथा अन्न से करनी चाहिये ।

पुराणों में मनुष्य बलि का आदेश

पितृ मातृ विहीनं च युवकं व्याधि वर्जितम् ।
विवाहितं दीक्षितं च परदार विहीनकम् ॥१०१॥
अजा रजं विशुद्धं च सच्छूद्र परिपोषितम् ।
तद बन्धुभ्यो धनं दत्वा क्रीतं मूल्यातिरेकतः ॥११२॥
स्नाययित्वा च तं धर्मी संपूज्यवस्त्र चन्दनैः ।
माल्यैर्धूपैश्च सिन्दूरैर्देधि गौरोचना दिभिः ॥१०३॥
तं च वर्ष भ्रामयित्वा भृत्य द्वारेण यत्नतः ।
वर्षान्ते च समुत्सृज्य दुर्गायै तं निवेदयत् ॥१०४॥
अष्टमी नवमी संधौ दद्यान्नायाति मेव च ।
इत्येवं कथितं सर्वं बलिदानं प्रसङ्गतः ॥१०५॥
बलिं दत्वा च स्तुत्वा च धृत्वा च कवचं बुधः ।
प्रणम्य दण्डवद भूमौ दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् ॥१०६॥

(ब्रह्म वैवर्त पु० प्रकृति खं० २ नारद दुर्गा पूजा विधि बलि पशु लक्षण विशेषो नाम ६४ वाँ अध्याय)

अर्थात्—दुर्गा को बलि देने के लिये ऐसा युवक लावे जो माता पिता से रहित हो, विवाहित हो, दीक्षित किया हुआ हो तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्धित न हो। बकरी की रज से विशुद्ध किया हुआ हो, अच्छे प्रकार से नौकरों से उसकी पोषण किया गया हो। उसके बंधुओं (घर वालों) को धन देकर उसे खरीद लिया जावे। उसे स्नान कराकर उसकी वस्त्र एवं चन्दन, धूप, सिंदूर-गौरोचन आदि से पूजा की जावे। फिर उसे नौकर के द्वारा यत्नपूर्वक भ्रमण कराया जावे। वर्ष के अन्त में उसे दुर्गा के सामने बलिदान कर दिया जावे। उसका अष्टमी व नवमी के सन्धि काल में बलिदान दिया जावे। बलि देकर बुद्धिमान पुरुष दुर्गा की स्तुति करे और कवच धारण करे, पृथ्वी पर लेटकर दुर्गा को दण्डवत् प्रणाम करे और पण्डितों को दक्षिणा देवे।

पुराणों में से यह पशु बलि एवं मनुष्य बलि देने के विधान हमने नमूने के तौर पर प्रस्तुत किये हैं। अब मृतक श्राद्ध में भी पशु-बलि का विधान देखें।

श्राद्ध में माँस भक्षण

हविष्य मत्स्य मांसैस्तु शशस्य नकुलस्य च।
सौकरच्छागलैणेयरौट वैंगवयेन च ॥१॥
औरभ्र गव्यैश्च तथा मांस वृद्धया पितामहाः।
प्रयान्ति तृप्तिं मांसैस्तु नित्यं वाध्रीणसामिषैः ॥२॥
खड्ग माँसमतीवात्र कालशाकं तथा मधु।
शस्तानि कर्मण्यत्यन्त तृप्ति दानि नरेश्वरः ॥३॥

(विष्णु पुराण अंश ३ अ० १६ गीता प्रेस प्रकाशन)

अर्थ—हवि, मत्स्य, शशक (खरगोश), नकुल, सूअर, बकरा, कस्तूरिया हिरन, काला हिरन, गाय, और मेष के मांसों से तथा गव्य

से पितृगण अधिक तृप्ति लाभ करते हैं और वार्ध्रीणस पक्षी के माँस से सदा तृप्त रहते हैं। १-२। हे नरेश्वर! श्राद्ध कर्म में गैंड़े का माँस, कालशाक और मधु अत्यन्त प्रशस्त और अत्यन्त तृप्तिदायक हैं।३।

समीक्षा—देवी देवताओं की कल्पना और उनको जगत का माता पिता बताना साथ ही उन पर मूक पशुओं का बलिदान,यही नहीं मनुष्यों को बलि देना, मृतक श्राद्ध के नाम पर निरीह जीवों को मार-मार कर खा जाना, यह सब स्पष्टतया पैशाचिक कर्म है। सत्य एवं अहिंसावादी वेदज्ञ एवं योगी महर्षि वेद व्यासजी से यह आशा नहीं की जा सकती है कि उन्होंने ऐसी गन्दी बातों से युक्त पुराणों का प्रणयन किया होगा। भारत में मध्यकाल में अर्थात् महाभारत के बाद जब माँसाहार का प्राबल्य हुआ था, यज्ञों में भी गाय, घोड़ा, मनुष्य, बकरे आदि को काट-काटकर चढ़ाया जाने लगा था, उसी युग में इन गन्दी बातों से युक्त पुराणों का निर्माण हुआ। उस युग की प्रचलित उपरोक्त दूषित बलिदान की परम्परा के उदाहरण पुराणों में देखने को मिलते हैं, जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान पुराण व्यासकृत नहीं हैं अथवा उनमें प्रक्षिप्तांशों की इतनी भरमार है कि उनका सत्य स्वरूप प्रारम्भ में क्या था यह निर्णय नहीं किया जा सकता है।

हिमालय पर ऊँचे वृक्ष

कदम्बस्तेषु जम्बूश्च पिप्पलो वट एव च ॥१७॥
एकादश शतायामाः पादपा गिरिकेतवः।
जम्बू द्वीपस्य सा जम्बूर्नाम हेतुर्महामुने ॥१८॥
महागज प्रमाणानि जम्बवास्तस्याः फलानि वै।
पतन्ति भूभृतः पृष्ठे शीर्य माणानि सर्वतः ॥१९॥

(विष्णु पुराण २,२)

अर्थ--हिमालय पर्वत पर कदम्ब, जामन और पीपल के ११००,११०० योजन ऊँचे वृक्ष पताकाओं के समान हैं। इस द्वीप का नाम इसीलिये जम्बू (जामुन) के नाम पर जम्बू द्वीप है। उन वृक्षों से बड़े हाथी के बराबर के जामुन के फल भूमि पर गिर कर सब ओर फैल जाते हैं।

समीक्षा--क्या व्यासजी जैसे विद्वान् से आशा की जा सकती है कि उन्होंने ऐसे गपोड़े वाले पुराण बनाये होंगे ?

राजा सुद्युम्न की कहानी

स कुमारो वनं मेरोरधस्तात्प्रविवेश ह।
पत्नास्ते भगवान रुद्रो रममाणः सहोमया ॥२५॥
तस्मिन् प्रविष्ट एवासौ सुद्युम्नः परवीरहा।
अपश्यत्स्त्रियमात्मानमश्वं च वडवां नृप ॥२६॥
तथा तदनुगाः सर्वे आत्मलिङ्ग विपर्ययम्।
दृष्ट्वा विमनसोऽभूवन् वीक्षमाणाः परस्परम् ॥२७॥

राजोवाच—

राजोवाच कथमेवं गुणे देशः केन वा भगवन् कृतः।
प्रश्न मेनं समाचक्ष्व कौतूहलं हि नः ॥२८॥

अर्थ—राजकुमार सुद्युम्न ने सुमेरु के नीचे वन में प्रवेश किया जिस में शिवजी पार्वती के साथ रमण करते रहे हैं।२५। उस बन में प्रवेश करके वीर सुद्युम्न ने अपने को स्त्री रूप में देखा और अपने घोड़े को भी घोड़ी बना हुआ देखा।२६। उसी प्रकार उस के साथ के सारे मनुष्य ने भी आपस में एक दूसरे को स्त्री बना हुआ देखा।२७। यह सुन कर राजा पूछने लगे भगवन् ! यह बताओ कि ऐसे गुण वाला देश कौनसा है व किसने उसे ऐसा किया है। मेरे मन को बड़ा कौतूहल है।२८।

मर्दों को औरत बनने के शाप की कथा

श्रीशुक उवाच—

एक दा गिरीशं द्रष्टुमृषयस्तत्र सुव्रताः ।
दिशो वितिमिराभासाः कुर्वतः समुपागमन् ॥२९॥
तान् विलोक्यांविका देवी विवासा व्रीडिता भ्रशम् ।
भर्तु रंकात्समुत्थाय नीवीमाश्वथ पर्यधात् ॥३०॥
ऋषयोऽपि तयोर्वीक्ष्य प्रसङ्ग रममाणयोः ।
निवृताः प्रययुस्तस्मान्नर नारायणाश्रमम् ॥३१॥
तदिदं भगवानाह प्रियायाः प्रिय काम्यया ।
स्थानं यः प्रविशेदेतत् स वै योषिद भवेदिति ॥३२॥

अर्थ—एक समय महान् ऋषिगण अपनी कान्ति से दिशाओं को प्रकाशित करते हुए महादेवजी को देखने को आये ।२९। उस समय पार्वतीदेवी नंगी होकर शिवजी की गोदी में बैठी रमण कर रही थीं। वे उन ऋषियों को आया हुआ देखकर लज्जित होकर जल्दी से पति की गोद से उठकर झटपट वस्त्र पहिनने लगीं ।३०। ऋषि लोग भी उन शिव पार्वती को प्रसंग करते हुए देखकर वहाँ से नरनारायण आश्रम को चले गये ।३१। तब शिवजी अपनी प्यारी के हित की कामना करके उससे बोले कि जो कोई भी इस स्थान में प्रवेश करेगा वह तुरन्त स्त्री बन जावेगा ।३२।

तत ऊर्ध्वं वनं तद् वै पुरुषा वर्जयंति हि ।
साचानुचर संयुक्ता विचचार वनाद् वनम् ॥३३॥
अथ तमाश्रमाभ्याशे चरंतीं प्रमदोत्तमाम् ।
स्त्रीभिः परिवृत्तां वीक्ष्य चकये भगवान् बुध ॥३४॥

सापि तं चकमे सुभ्रूः सोम राज सुतं पतिम् ।
स तस्यां जनया मास पुरूर वसमात्मजम् ॥३५॥
एवं स्त्रीत्व मनु प्राप्तः सुद्यु म्नो मानवो नृपः ।
स स्मार स्वकुलाचार्यं वशिष्ठमिति शुश्रु म ॥३६॥
स तस्य तां दशां दृष्ट्वा कृपया भ्रश पीड़ितः ।
सुद्यु म्नस्याशयन् पुंसत्व मुपाधावत् शंकरम् ॥३७॥
तुष्ट स्तस्मै स भगवान् ऋषये प्रियमावहन् ।
स्वांच वाचमृतां कुर्वन्निदमाह विशांपते ।३८॥
मांसंपुमान् स भविता मासं स्त्री तव गोत्रजः ॥३९॥

(भागवत स्कन्द ९ अ० १)

अर्थ—अब पूर्वोक्त सुद्यु म्न चरित्र को कहते हैं । वह सुद्यु म्न स्त्री बनकर अपने अनुचरों के साथ एक वन से दूसरे में विचरने लगी ।३३। उसे अपने आश्रम के पास स्त्रियों के साथ घूमते एवं सब स्त्रियों से सुन्दर देखकर बुध उस पर आसक्त हो गया ।३४। चन्द्रमा के बेटा राजपुत्र बुध को देखकर वह स्त्री भी उसे पति रूप में चाहने लगी । बुध ने उससे पुरुरवा नाम का लड़का पैदा किया । ।३५। उस स्त्रीत्व अवस्था में सुद्यु म्न ने अपने आचार्य वशिष्ठ का स्मरण किया, यह हमने सुना है ।३६। वसिष्ठजी उसकी यह दशा देखकर दुःखी हुए और सुद्यु म्न को पुरुष करने की इच्छा से महादेवजी के नाम का जप करने लगे ।३८। महादेव ने वसिष्ठ से प्रसन्न होकर अपनी वाणी को भी सच रखने के लिये कहा कि तुम्हारा शिष्य यह राजा एक महीना पुरुष रहेगा और एक महीना स्त्री रहा करेगा ।३९।

समीक्षा—शिवजी का उमा के साथ खुले मैदान में गोदी में उसे नङ्गी करके बैठाकर प्रसंग करना, ऋषियों का आना, शिवजी का मर्दों को औरत होने का शाप देना, सुद्युम्न का स्त्री हो जाना, बुध से शादी करके लड़का पैदा करना, एक-एक माह क्रम से आजीवन स्त्री व पुरुष बनते रहना यह सब शेखचिल्ली की गप्पें नहीं तो क्या हैं ? क्या व्यासजी कोई गल्प लेखक (उपन्यासकार) थे जो ऐसी मनो-रञ्जक गप्पें लिखा करते थे। योगीराज महानवेदज्ञ महर्षि व्यासजी पर ऐसी बेतुकी गप्पों से भरी हुई पुस्तक भागवत को बनाने की बात कहना उनके ऋषित्व एवं महान् व्यक्तित्व पर भयानक लांछन लगाना होगा। ऐसी दिलचस्प कहानियां तो किसी उपन्यासकार की रचना हो सकती है। स्पष्ट हैं कि भागवत व्यासजी कृत नहीं है।

हनुमानजी की विचित्र पैदायश

एकस्मिन्न समये शम्भुरद्भुतोति कर प्रभु।
ददर्श मोहिनी रूपं विष्णोस्सहिवसद्गुणः ॥३॥

चक्रे स्वं क्षुभितं शम्भुः कामबाणहतोयथा।
स्वम्वीर्यम्पातयामास राम कार्यार्थमीश्वरः ॥४॥

तद्वीर्यं स्थापयामासः पत्रे सप्तर्षयश्चते।
प्रेरिता मनसा तेन रामकार्यार्थमादरात् ॥५॥

तैर्गौतम सुतायां तद्वीर्यं शंभोर्महर्षिभिः।
कर्ण द्वारा तथां जन्यां रामकार्यार्थमाहितम् ॥६॥

ततश्च समये तस्माद्धनूमानिति नामभाक्।
शम्भुर्जज्ञे कपि तनुर्महाबल पराक्रमः ॥७॥

(शिव पु० शत रुद्र सं० अ० २०)

अर्थ--एक समय लीला करने वाले शिव ने विष्णु का मोहिनी स्वरूप देखा ।३। तो कामवाण से पीड़ित हो शिवजी ने व्याकुल हो अपना वीर्य गिराया ।४। तब आदर से राम के कार्य के लिये मन से शिवजी द्वारा प्रेरणा किए हुए उन सप्त ऋषियों ने उस वीर्य को पत्ते पर स्थापित किया ।५। उन ऋषियों ने वह शिव वीर्य गौतम पुत्री (अञ्जनी) में कान के द्वारा प्रविष्ट किया ।६। उस समय वीर्य से महाबली तथा पराक्रमी बानर शरीर वाले हनुमान नामक शिवजी उत्पन्न हुए ।७।

समीक्षा–विष्णुजी स्त्री बन गये। शिवजी उसे देखते ही कामान्ध हो गये व उनका शुक्रपात होगया। सप्तर्षि भी वहाँ पत्तों का कटोरा लिये तैयार बैठे थे, उन्होंने झटपट उस पतित वीर्य को कटोरा लगाकर भर लिया। वे उसे लेकर चले और गौतम की पुत्री (पवन की पत्नी) अंजनी के कान में घुसेड़ आये। कान में होकर वह वीर्य कहाँ गया यह स्पष्ट नहीं किया। यदि गर्भाशय में चला गया तो प्राकृतिक मार्ग से अंजनी ने हनुमान को ९ माह बाद जन्म दिया होगा, और यदि वह वीर्य कान में ही भरा रहा होगा तो कान में कीड़े पड़कर हनुमान जी पैदा होगये होंगे। पुराणों की गल्पें भी विलक्षण होती हैं। कान में वीर्य भर दे और लड़का पैदा हो जाता है। पौराणिक पण्डितों को इस चमत्कार को अपनी किसी प्रयोगशाला में प्रत्यक्ष दिखाना चाहिये। भागवत स्क० ८ अ० १२ में लिखा है कि उसी शिव के शुक्रपात से पृथ्वी पर सोने चाँदी की खानें बन गई थीं। पर शिवपुराण ने उसी वीर्य से हनूमान जी बना दिये। शिवजी का वीर्य भी बड़ा चमत्कारी होता था। एक बार वह और ऐसे ही हिमालय पहाड़ पर पतित हो गया था तो उसे अग्नि कबूतर बनकर निगल गया। फिर उसने ऋषि पत्नियों को बाँट दिया। वे गर्भवती होगईं। उन्होंने हिमालय पर गर्भ-पात कर दिया तो उसकी गरमी से हिमालय जलने लगा था। उसने उसे गंगा की शीतल धारा में बहा दिया था। गंगा जी भी उसे सह न

सकी थीं। उनकी धारा ही उसके मारे बन्द होगई थी। तो उसने उसे सरकण्डों में फेंक दिया था जहाँ तत्काल छः मुख वाला बालक पैदा हो गया था जिसका नाम स्वामि कार्तिकेय था। यह भी शिवजी का बहादुर बेटा माना जाता है।

(नोट—इसकी पूरी कथा के लिये देखो हमारी पुस्तक 'शिवजी के चार विलक्षण 'बेटे'। यह कथा शिवपुराण में दी हुई है। शिवजी के अपनी दोनों पत्नियों सती व पार्वती से कभी कोई औलाद पैदा न हो सकी थी, पर पृथ्वी पर शुक्रपात हो जाने से लड़के अवश्य पैदा हो गये थे। पुराणों की इन बेतुकी कथाओं से प्रकट है कि इनके बनाने वाले गप्पी लोग रहे होंगे। वेद व्यासजी जैसे महान् विद्वान् ऋषि की लेखनी से ऐसी गल्पें सम्भव नहीं हैं।

ब्रह्मा जी का पुत्री-गमन

सावित्रीं लोक सृष्टियर्थं हृदि कृत्वा समास्थितः।
ततः सञ्जपतस्तस्यभित्वा देहम कल्मषम् ॥३०॥
स्त्रीरूपमर्द्धय करोर्द्धम पुरुष रूपवत्।
शतरूपाय सा ख्याता सावित्री च निगद्यते ॥३१॥
सरस्वत्यथ गायत्री ब्रह्माणी च परन्तप।
ततः स्वदेह सम्भूतामात्मजामित्यकल्पयत् ॥३२॥
दृष्ट्वा तां व्यथितस्तावत्कामबाणार्दितो विभुः।
अहो रूपमहो रूपमिति चाह प्रजापतिः ॥३३॥
ततो वशिष्ठप्रमुखाः भगिनी मिति चुक्रुशुः।
ब्रह्मा च किंचिद्दृशे तन्मुखालोकनादृते ॥३४॥
अहोरूप महोरूपमिति प्राहः पुनः पुनः।

ततः प्रणाम नम्रान्तां पुनरेवाभ्यलोकयत् ॥३५॥
अथ प्रदक्षिणां चक्रे सा पितुर्वावर्णिनी ।
पुत्रेभ्यो लज्जित स्यास्य तद्रूपालोक नेच्छया ॥३६॥
आविर्भूतं ततो वक्त्रं दक्षिणं पाण्डु गण्डवत् ।
विस्मयेम्फुरदोष्ठञ्च पाश्चात्य मुदगात्ततः ॥३७॥
चक्चर्थं भवत्पश्चाद्वामं काम शरातुरम् ।
ततोऽन्यद्भवत्तस्य कामातुरतया तथा ॥३८॥
उत्पतन्त्यास्तदाकारा आलोकनकुतूहलात् ।
सृष्टयर्थं यतकृतं तेन तपः परम दारुणम् ॥३९॥
तत्सर्वनाश मगमत् स्वसुतोपगमेच्छया ।
तेनोर्ध्वं वक्त्रं भवत्पञ्चमं तस्यधीमतः ।
आभिर्भवज्जटाभिश्च तद्व्क्रञ्चावृणोत्प्रभुः ॥४०॥
ततस्तान्ब्रवीत ब्रह्मा पुत्रानात्म समुद्भवान् ।
प्रजाः सृजध्वमभितः सदेवासुर मानुषीः ॥४१॥
एवमुक्तास्ततः सर्वे ससृजुर्विविधाः प्रजाः ।
गतेषु तेषु सृष्ट्यर्थं प्रणामावनतामिमाम् ॥४२॥
उपयेमे स विश्वात्मा शतरूपामनिन्दिताम् ।
सम्बभूव तया सार्द्धं मति कामातुरो विभुः ।
सलज्जाञ्चकमे देवः कमलोदरमन्दिरे ॥४३॥
यावदब्दशतं दिव्यं यथान्यः प्राकृतोजनः ।
ततः कालेन महता तस्याः पुत्रोऽभवन्मनुः ॥४४॥
(मत्स्य पुराण अ० ३)

भावार्थ—ब्रह्माजी ने अपने आधे शरीर से शतरूपा को उत्पन्न किया और उसे अपनी पुत्री मानने लगे (३०-३१-३२) । तदनन्तर उसके सौन्दर्य को देखकर काम के बाणों से पीड़ित हुए उसके मुँह को देखने लगे, और बारम्बार कहने लगे इसका रूप (सौन्दर्य) कैसा आश्चर्यकारी सुन्दर है ? इसके बाद उस सुन्दर रूप रङ्ग वाली सरस्वती ने अपने पिता ब्रह्मा की प्रदक्षिणा की । उस समय पुत्रों की उपस्थिति से लज्जित होकर ब्रह्माजी का मुँह उसे देखने की इच्छा करके दाहिनी ओर से पीला हो गया और ओष्ठ भी फड़कने लगे । ब्रह्माजी ने अपने पुत्रों को सृष्टि की रचना करने को अन्यत्र भेज दिया और फिर उनके चले जाने के बाद काम बाणों से महा पीड़ित हुए । ब्रह्माजी नम्रमुखी और अनिन्दित अपनी पुत्री शतरूपा नाम की स्त्री को ग्रहण करके बड़ी लज्जा से युक्त होकर १०० दिव्य वर्ष पर्यन्त साधारण मनुष्यों के समान उसमें रमण करते रहे और उसी मैथुन से उनका पुत्र मनु पैदा हुआ । (३० ४०)

समीक्षा—जिस ब्रह्मा को वेदकर्ता एवं सारे जगत का उत्पादक ईश्वर माना जाता है उसे पुत्री गमन का भयंकर लाञ्छन लगाने वाली इस मूर्खतापूर्ण कथा को लिखने वाला भी कोई वैसा ही धूर्त व्यक्ति हो सकता है । महानात्मा वेद व्यासजी की लेखनी से ऐसी गन्दी कथाओं वाले पुराण बनाये जा सकते हैं यह विश्वास करने की बात नहीं है ।

सूर्य नारायण की चरित्रहीनता

एक समय निक्षुभा को शाप मिला तब उसने ऋजिह्व नाम की ऋषि कन्या के रूप में जन्म लिया । वह अपने पिता की आज्ञा से अग्नि की सेवा किया करती थी । एक दिन उसको सूर्यनारायण ने देखा । उसका उत्तम रूप और यौवन देखकर सूर्य नारायण कामवश हो गये और विचार कर अग्नि में प्रवेश किया । वह कन्या अग्नि की

प्रदक्षिणा करती थी। उस समय अग्नि से प्रगट हो सूर्य नारायण ने उस कन्या का हाथ पकड़ लिया और क्रोध कर कहा कि तैंने हमको उल्लंघन किया है। अब हम तेरे में पुत्र उत्पन्न करेंगे। इतना कह..... उसमें पुत्र उत्पन्न किया। उसका नाम जलगण्ड हुआ। पुत्रोत्पत्ति के बाद सूर्यनारायण अन्तर्ध्यान न हो गये। पता लगने पर कन्या के पिता ने कन्या को शाप दिया कि तूने अपनी चंचलता से पुत्र उत्पन्न किया है इसलिये यह अपूज्य होगा।

(भविष्य पुराण भाषा 'लखनऊ छापा' पूर्वार्ध अ० १३३)

समीक्षा—सूर्य नारायण ने इस कथा में एक निष्कलंक ऋषि-पुत्री के साथ बलात्कार किया है। इसी प्रकार इन्हीं सूर्य नारायण ने क्वारी कुन्ती के साथ भी बलात्कार करके कर्ण को पैदा किया था। वास्तव में सूर्य नारायण व्यभिचारी थे या नहीं यह तो पृथक बात है, पर भविष्य पुराण ने तो उनको व्यभिचारी लिख ही दिया है। यदि पुराण व्यासकृत होते तो कम से कम देवताओं को, जो श्रेष्ठ गुणों से युक्त होने चाहिये, दुश्चरित्र न लिखा गया होता।

वीर्य पीने का विधान

तृतीयं तत्परं स्थानं केदारं चेति विश्रुतम्।
मच्छरीराद्विनिष्क्रान्तं शुक्राख्यं पानमुत्तमम् ॥१२॥
केदार मुदकं देवि ये पिवन्ति महाजनाः।
मम तुल्य बलाः सर्वे सर्वे स्वच्छन्दगामिनः ॥१३॥
तस्यास्तोयं शरीरस्थं मम लिङ्गाद्विनिःसृतम्।
मृतो यत्र गतो वापि स्कन्दस्य सदृशोभवेत् ॥२०॥

(केदार कल्प पञ्चम पटल)

अतः परं प्रवक्ष्यामि देवी केदारस्य तु यत्फलम्।
मम वीर्य स्थितं देवि केदारं तीर्थ मुत्तमम् ॥१॥
(केदार कल्प पटल ७)

कामयेत्स्त्रो सहस्रादीत पिवेत्केदार शम्बरम् ।
पीत मात्रे जले देवि किमर्थं परितप्यते ॥५॥
(केदार कल्प पटल १०)

अर्थ—शिवजी बोले—उसके आगे केदार नामक स्थान है, वह मेरे शरीर से निकला शुक्र है और पान करने योग्य है ।१२। हे देवि ! जो पुरुष केदार के जल को पीते हैं, वे मेरे समान पराक्रमी हो स्वेच्छाचारी होते हैं ।१३। मेरे लिङ्ग में निकला केदार का जल जिसके शरीर में स्थित हो, वह मनुष्य जहाँ कहीं भी जाय तो स्वामि कार्तिकेय के समान होता है ।२०। शिवजी बोले-हे देवि ! में केदार के फल को कहता हूँ, यह उत्तम तीर्थ मेरे वीर्य से स्थित हुआ है ।१। सहस्रों स्त्रियों की कामना करने वाला केदार के उत्तम जल को पीवे ।५।

समीक्षा—शिवजी का शुक्रपात हुआ, उसीसे केदार कुण्ड का जल बन गया । उसे पीने से सर्व कामना पूर्ण होती है तथा व्यभिचार के लिये बहुत सी औरतें भी उस शिव वीर्य को पीने वाले को मिलती हैं । ऐसी बेहूदी बात कि वीर्य पान करो और विषय भोग के लिये औरतें प्राप्त करो, कदाचित सनातन धर्म के अवतार व्यास जी की सूझ तो हो नहीं सकती है । यह बात इस का प्रमाण है कि यह पुराण व्यास कृत न होकर वाममार्गीय सम्प्रदाय वालों से बनाया होगा जिनके पन्थ में रज वीर्य का पीना धर्म माना जाता है ।

सात समुद्रों की विलक्षण प्रकार से उत्पत्ति

राजा प्रियवृत के बारे में लिखा है कि उन्होंने पृथ्वी का ११ अरब वर्षों तक राज्य किया था । एक बार उन्होंने विचार किया कि–

"यावदवभासयति सुरगिरि मनुपरिक्रमन् भगवानदित्यौ बसुधा-तल मर्धेनैव प्रतपत्यर्धेनावच्छादयति तदाहि भगवदुपानसनोपचिताति पुरुष प्रभास्तदनभिनंदन् समजवेन रथेन ज्योतिर्मयेन रजनीमपिदिनं करिष्यामीति सप्त कृत्वस्तरणिमनु पर्यक्रमद् द्वितीय इव पतंगः ॥३०॥ ये वा उ हतद्रथचरण नेमिकृत परिखातास्ते सप्त सिन्धव आसन् यत् एव कृताः सप्त भुवोद्वीपाः ॥३१॥

(श्रीमद् भागवत स्कन्द ५ अ० १)

अर्थ—जब तक सूर्यनारायण सुमेरु पर्वत (हिमालय) की परिक्रमा करते, दिन में तपते और रात में अस्त होकर आधे-आधे समय प्रकाश और अन्धकार करते हैं सो दिन में भगवत आराधन से वृद्धित प्रभाव पुरुषों को रात्रि में अन्धकार होने से दुखित जानकर सूर्य के समान वेग वाले प्रकाशमान रथ में चढ़कर रात्रि को भी दिन करने की इच्छा से उन्होंने सूर्य की सात बार परिक्रमा की और दूसरे सूर्य के समान प्रकाशित हुए ॥३०॥ उस परिक्रमा करने से जो उनके रथ के पहियों से लकीर की खाई बनी वे ही सात समुद्र हुए और उनके बीच की भूमि पर सात द्वीप बन गये ।३१।

समीक्षा—राजा प्रियवृत के रथ के पहियों से जो लकीर बनी उससे सात समुद्र बन गये यह भी खुला पौराणिक गपोड़ा है। यदि पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी ने बनाया होता तो ऐसे बुद्धि से विपरीत गपोड़े उन्होंने न लिखे होते।

वृक्ष व वनस्पतियों की उत्पत्ति

कन्दर्पस्य कराग्रे तु कदम्बश्चारु दर्शनः ।
तेन तस्य परीप्रीतिः कदम्बेन विवर्धते ॥२॥
यक्षाणमधिपस्यापि मणिभद्रस्य नारद ।
वट वृक्षः समभवत्त स्मिंस्तस्यरतिः सदा ॥३॥

महेश्वरस्य हृदये धत्तूर विष्टपः शुभः ।
संजातः स च शर्वस्य रति कृतस्य नित्यशः ॥४॥
ब्रह्मणो मध्यतो देहाज्जातो मरकतप्रभः ।
खादरः कंटकी श्रेयानभवद्विश्वकर्मणः ॥५॥
गिरिजायाः करतले कुन्द गुल्मस्त्वजायत ।
गणाधिपस्य कुम्भस्थे राजते सिन्धु वारकः ॥६॥
यमस्य दक्षिणे पार्श्वे पलाशो दक्षिणोत्तरे ।
कृष्णोदुम्बर कौरौद्रो जातः क्षोभकरोव्ययः ॥७॥
स्कन्दस्य बन्धु जीवश्चरवेरश्वत्थ एव च ।
कात्यायन्याः शमी जातः बिल्वो लक्ष्म्याः करेऽभवत् ॥८॥
नागानां मुखतो ब्रह्मञ्छरस्तंवोव्यजायत ।
वासुकेर्विस्तृते पुच्छे पृष्ठे दूर्वा सिता सिता ॥९॥
साध्यानां हृदये जातो वृक्षो हरित चन्दनः ।
एवं जातेषु सर्वेषु तेन तत्र रतिर्भवेत् ॥१०॥
(वामन पुराण अ० १७)

अर्थ—कामदेव से कदम्ब, कुवेर से वट, महादेव के हृदय से धतूरा, ब्रह्मा की देह के मध्य भाग से खैर, विश्वकर्मा के शरीर से कण्टकि, पार्वती के हाथ के तलवे से कुन्द, गणेश के मस्तक से संभालू, यमराज के दाहिने पाश्व से काला गूलर, स्वामि कार्तिकेय के शरीर से जीयापोता, सूर्य के शरीर से पीपल, कात्यायनी के शरीर से शमी, लक्ष्मी के हाथ से बेल, साँपों से शरस्तंव, वासुकी सर्प की विष्टित पूंछ के पृष्ठ भाग से सफेद और काली दूब तथा साध्य देवताओं के हृदय से हरित चन्दन पैदा हुआ। इस प्रकार जो-जो जिसके शरीर से उत्पन्न हुए उस उसमें उनकी प्रीति हुई।

नोट—इसी प्रकार से पशु पक्षी-जलचर-नभचर-थलचर जीवों एवं वृक्ष व वनस्पति की उत्पत्ति स्त्रियों के गर्भ से होने का वर्णन भागवत पुराण स्कन्द ६ अ० ६ में तथा महाभारत शान्ति पर्व अ० १६६ श्लोक १७ से २० तक में भी दिया गया है।

समीक्षा—मानव स्त्रियों अथवा देव शरीरों से पशु पक्षी व वृक्षादि की उत्पत्ति की गप्प ढोकना जनवंचक साधारण कथक्कड़ों का काम हो सकता है, महा विद्वान् महर्षि वेद व्यास जी महाराज का नहीं। स्पष्ट है कि ऐसी कहानियों वाले पुराण व्यासकृत नहीं है।

श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के चीर हरण की कथा

पुराण में एक कथा आती है कि एक दिन कुछ ग्वालिन स्त्रियाँ (गोपियाँ) यमुना में स्नान कर रही थीं। उन्होंने अपने वस्त्र किनारे पर रख दिये थे। एकान्त स्थान देखकर वे नग्न होकर स्नान कर रही थीं। श्रीकृष्ण जी वहाँ छिपकर पहुँच गये और गोपियों के किनारे पर रखे पहिनने के वस्त्र उठाकर चुपके से एक पेड़ पर चढ़ गये। जब गोपियों ने देखा कि उनके वस्त्र किसी ने चुरा लिये हैं तो इधर-उधर देखने पर उन्होंने कृष्णजी को वस्त्रों सहित वृक्ष पर बैठा देखा। गोपियों ने कृष्ण की बहुत खुशामद की कि उनके वस्त्र दे दें पर उन्होंने वस्त्र नहीं दिये। गोपियों ने कहा कि हे कृष्ण ! हम नङ्गी हैं, हमारे वस्त्र दे दो, हम तुम्हारी दासी हैं।

तो कृष्ण जी बोले—

भवत्यो यदि मे दास्यो मयोक्तं वा करिष्यथ।
अत्रागत्य स्व वासांसि प्रतीच्छन्तु शुचिस्मिताः ॥१६॥
ततो जलाशयात् सर्वा दारिकाः शीतवेपिताः।
पाणिभ्यां योनि माच्छाद्य प्रोत्तेरुः शीतकर्षिताः ॥१७॥

भगवानाहृता वीक्ष्य शुद्ध भाव प्रसादितः ।
स्कन्धे निधाय वासांसि प्रीतः प्रोवाचसस्मितम् ॥१८॥
यूयं विवस्त्रा यदपो ध्रत वृता ।
व्यगाहतैत्त ततद्वदेव हेलनम् ।
बद्ध्वाञ्जलिं मूर्ध्न्यपनुत्तयेंऽहसः ।
कृत्वा नमोऽधो वसनं प्रग्रह्यताम् ॥१९॥
तास्तथा वनता दृष्ट्वा भगवान् देवकी सुतः ।
वासांसि ताभ्यः प्रायच्छत् करुणस्तेन तोषितः ॥२१॥

अर्थ—कृष्ण ने कहा कि यदि तुम मेरी दासी हो और मेरी आज्ञा का पालन करना चाहती हो तो यहाँ आकर अपने वस्त्र ले जाओ ॥ १६ ॥

वे गोपियाँ ठण्ड से ठिठुर रही थीं, कृष्ण की ऐसी आज्ञा सुनकर वे अपने दोनों हाथों से योनि को छिपाकर यमुना के बाहर निकलीं, उस समय उन्हें बड़ी ठंड सता रही थी। १७। उनके शुद्ध भाव को देखकर कृष्ण जी बड़े प्रसन्न हुए। अपने पास उन्हें आई देखकर उनके वस्त्र कन्धे पर रखकर मुस्कराते हुए बोले। १८। यद्यपि तुम व्रत धारण करने वाली हो, परन्तु तुमने नङ्गी होकर जल में स्नान किया है और जल देवता का अपमान किया है। अतः तुम अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर से लगाओ,और झुककर प्रणाम करो। उसके बाद अपने-अपने वस्त्र ले जाओ। १९। उन कुमारियों ने (गुप्ताङ्गों से हाथ हटा कर) दोनों हाथ जोड़कर और हाथों को सर से लगाकर प्रणाम किया। इस पर कृष्ण बहुत खुश हुए और करुणा करके (महरबानी) करके) उनको उनके वस्त्र दे दिये। २०।

द्रढ़ं प्रलब्धास्त्रपया च हापिताः।
प्रस्तोभिताः क्रीडनवच्च कारिताः।
वस्त्राणि चैवा पहृतान्यथाप्यमुं।
ता नाभ्यसूयन प्रिय संगनिर्वृताः ॥२२॥
परिधाय स्व वासांसि प्रेष्ठ संगम सज्जिताः।
ग्रहीत चित्ता नो चेलुस्त स्मिल्लज्जायितेक्षणः ॥२३॥

अर्थ—कृष्ण ने उन कुमारियों से छल भरी बातें कीं। उनका लज्जा संकोच छुड़ाया, उनके साथ हँसी मजाक की और उन्हें कठ-पुतलियों के समान नचाया, उनके वस्त्र हर लिये, फिर भी वे नाराज नहीं हुई। बल्कि कृष्ण के संग से और भी प्रसन्न हुईं। २२। उन गोपियों ने अपने वस्त्र पहिन लिये। वे कृष्ण के साथ समागम के लिये सज कर लजीली चितवन से उन्हीं की ओर निहारने लगी। २३।

(भागवत स्कन्द १० अ० २२)

समीक्षा—श्रीकृष्ण जैसी महानात्मा के विषय में भागवत पुराण का यह लिखना कि उन्होंने नग्न स्नान करने वाली गोपियों के साथ छल व मजाक किया, वह भी इस लिये के गोपियों के गुप्तांगों के नग्न दर्शन किये जा सकें, उनको नङ्गी हालत में जल से बाहर निकलने पर विवश कर दिया, जब वे अपनी लज्जा को हाथों से ढक-कर बाहर आगईं तो उनसे दोनों हाथ उठवा कर सिर से लगाकर प्रणाम कराया और जब नग्न दर्शन कर लिये तब उनके वस्त्र दिये। यह सब कृष्ण को कलंकित करने वाली बातें हैं। पुराणकार लिखता है कि ठण्ड से ठिठुरने के कारण अत्यन्त विवशता में वे बिचारी जल में से बाहर निकलीं। वे अवश्य कृष्ण पर नाराज हुई होंगी क्योंकि उनके साथ अत्यन्त भद्दे किस्म की मजाक की गई थी। परन्तु पुराण-कार ने इस बात को छिपाकर लिख दिया कि वस्त्र पहिन कर वे प्रेम

के कारण कृष्ण जी से समागम की इच्छा से उनकी ओर देखने लगीं। इससे पुराणकार ने गोपियों को व्यभिचारिणी एवं कृष्ण को चरित्रहीन सिद्ध किया है। सनातन धर्म की मान्यता के अनुसार जिन वेद व्यासजी ने श्रीकृष्ण के उपदेश गीता जैसे ग्रन्थ का सम्पादन किया था और उस गीता के रचयिता श्रीकृष्ण को महान् व्यक्ति सिद्ध किया था,वही चौबीस अवतारों में से एक श्री वेदव्यासजी उस महा-नात्मा (सनातनी मान्यतानुसार साक्षात् परमात्मा) श्रीकृष्ण के ऊपर चरित्रहीनता का कलङ्क लगाने वाले भागवत जैसे अनगल पुराणों के बनाने वाले हो सकते हैं, यह विश्वास नहीं किया जा सकता है। स्पष्ट है कि ऐसी कलंककारिणी घटनाओं के वर्णन से युक्त पुराण-साहित्य श्रीवेद व्यासजी कृत नहीं वरन् सनातन धर्म के शत्रुओं के द्वारा रचा गया है, जिनका लक्ष्य आर्य जाति के महापुरुषों को कलंकित करना एवं आर्य साहित्य को भ्रष्ट करना था। पर आज भी कुछ कठमुल्ला प्रकार के अन्धविश्वासी पौराणिक विद्वान इस घटना का समर्थन करते हुए यह कहते देखे जाते हैं कि गोपियों को जल में नग्न स्नान करते देखकर उनको कृष्ण ने वस्त्र चुराकर यह उपदेश दिया था कि जल में सर्वथा नग्न स्नान नहीं करना चाहिये। किंतु यदि केवल उप-देश करना कृष्ण को इष्ट था तो जब गोपियाँ अपने गुप्तांग को दोनों हाथों से ढककर वस्त्र माँगने को सर्दी में काँपती हुई कृष्ण के पास गईं तो कृष्ण के इस आदेश का क्या तात्पर्य था कि तुम गुप्तांग से दोनों हाथों को हटाकर हाथ जोड़कर हाथों को सिर से लगाकर सलामालेकुम करो तब तुमको कपड़े मिल सकेंगे और जब उन्होंने विवशता में ऐसा किया तो उनको उसके बाद कपड़े दिये गये। पुराणकार स्पष्ट लिखता है कि कृष्ण ने उनके साथ छल व हँसी मजाक किया था। इस विवरण का स्पष्ट अर्थ है कि पुराणकार यह दिखाना चाहता है कि कृष्ण जी जो इतने समझदार थे कि गोपियों को उपदेश दे सकते थे, उनकी भावना केवल उपदेश देने की नहीं थी वरन् गोपियों के प्रत्येक अंग को नग्न

अवस्था में देखने की थी। यदि ऐसी बात नहीं थी तो पुराणकार को यह लिखने की आवश्यकता नहीं थी कि उन्होंने गोपियों से छल व मजाक किया। स्पष्ट है कि इस घटना का पौराणिक विवरण किसी कृष्ण के शत्रु द्वारा भागवत में लिखा गया है और यह भागवत वेद व्यासजी की रचना नहीं है।

पुराणों का भूगोल वर्णन

जम्बूप्लाक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलश्चापरो द्विज।
कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चैव सप्तमः ॥५॥
एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः।
लवणोक्षसुरा सर्पिर्दधि दुग्ध जलैः समम् ॥६॥
जम्बू द्वीपः समस्तानामेतेषां मध्य संस्थितः।
तस्यापि मेरु मैत्रेय मध्ये कनक पर्वतः ॥७॥
चतुराशीति साहस्रो योजनैरस्य चोच्छ्रयः।
प्रविष्टः षोडशाधस्ताद् द्वात्रिंशन्मूर्ध्नि विस्तृतः ॥८॥
मूले षोडश साहस्रो विस्तारस्तस्य सर्वशः।
भूपद्मस्यास्य शैलोऽसौकर्णिकाकार संस्थितः ॥९॥
हिमवान्हेम कूटश्च निषधश्चास्य दक्षिणे।
नीलः श्वेतश्च श्रङ्गी च उत्तरे वर्ष पर्वताः ॥१०॥
लक्ष प्रमाणौ द्वौ मध्यौ दशहीनास्तथापरे।
सहस्रद्वितयोच्छ्रयास्तावद्विस्तारिणश्च ते ॥११॥
भारतं प्रथमं वर्षं ततः किम्पुरुषंस्मृतम्।
हरि वर्षं तथैवान्यन्यन्मेरोर्दक्षिणतो द्विज ॥१२॥

(विष्णु पुराण अंश २ अ० २)

अर्थ—पाराशर ने कहा—हे द्विज ! जम्बू, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौञ्च, शाक और सातवाँ पुष्कर-ये सातों द्वीप चारों ओर से खारे पानी; इक्ष रस, मदिरा-घृत, दधि, दुग्ध और मीठे जल के सात समुद्रों से घिरे हुए हैं ।५-६। जम्बू द्वीप इन सबके मध्य में स्थित और उसके भी बीचों बीच में स्वर्णमय सुमेरु पर्वत है । ७ । इसकी ऊँचाई चौरासी हजार योजन है और नीचे की ओर यह सोलह हजार योजन पृथ्वी में घुसा है और ऊपरी भाग में इसका विस्तार बत्तीस हजार योजन है । इस प्रकार यह पर्वत इस पृथ्वी रूप कमल की कर्णिका (कोश) के समान स्थिति है । ९ । इसके दक्षिण में हिमवान्, हेमकूट और निषध तथा उत्तर में नील, श्वेत और श्रृंगी नामक वर्ष पर्वत है । (जो भिन्न भिन्न वर्षों का विभाग करते हैं) ।१०। उनके बीच के दो पर्वत (निषध और नील) एक-एक लाख योजन तक फैले हुए हैं, उनसे दूसरे दूसरे दस-दस हजार योजन कम है । (अर्थात् हेमकूट और श्वेत नब्बे-नब्बे हजार योजन तथा हिमवान और श्रृंगी अस्सी-अस्सी सहस्र योजन तक फैले हुए हैं) वे सभी दो-दो सहस्र योजन ऊँचे और इतने ही चौड़े हैं ।११। हे द्विज ! मेरु पर्वत के दक्षिण की ओर पहला भारतवर्ष है तथा दूसरा किम्पुरुषवर्ष और तीसरा हरि वर्ष है । १२ ।

समीक्षा—भूगोल के विद्यार्थी जानते हैं कि इस पृथ्वी की गोलाई केवल लगभग २५ हजार मील व व्यास लगभग आठ हजार मील का है । ऐसी दशा में उपरोक्त पुराण का वर्णन कितना मिथ्या है यह समझा जा सकता है । वेद व्यास जैसे महान् योगी की लेखनी से पुराणोक्त ऐसा गल्पपूर्ण वर्णन नहीं लिखा जा सकता था । अतः यह निश्चित है कि पुराण व्यासजी महाराज की रचनायें नहीं है ।

इसी प्रकार की बहुत सी मार्के की बेतुकी मनोरञ्जक पुराणों की गल्पों को हमने प्रथक पुस्तक 'पौराणिक गप्प दीपिका' (मू० ५५ न० पैसे) के नाम से प्रकाशित किया है,जिसे इसी सम्बन्ध में देखना उचित

होगा। पुराणों में तीर्थों, व्रतों की कथाओं एवं उनके महात्म्यों की भरमार है। नाना प्रकार की गल्पें उनका महत्व दर्शाने एवं भक्तों को भ्रम में डालने के लिये गढ़-गढ़कर पुराणों में भरदी गई हैं। भुक्ति के लिये एक से एक बढ़िया नुस्खे पुराणों में लिखे गये हैं। किसी भी देवता के नाम स्मरण से, किसी भी तिथि को व्रत रखने से, गंगा आदि नदियों में स्नान ही नहीं बल्कि उनका नाम ले लेने मात्र से, किसी भी देवता की मूर्ति के पूजन व दर्शन से, माथे पर त्रिपुण्ड्र, ऊर्ध्वपुण्ड्र आदि तिलक-साइनबोर्ड लगाने से, शरीर पर केवल भस्म मात्र लगा लेने से, बेलपत्र आदि अथवा एक लोटा जल शिवजी पर चढ़ा देने से, मन्दिर बनवाने से, मन्दिर में झाड़ू लगा देने से, पुराणों के पाठ ही नहीं केवल एक दो श्लोक सुन लेने मात्र से इत्यादि सैकड़ों प्रकार से सस्ती से सस्ती मुक्ति प्राप्त करने का विधान पुराणों में मिलेगा। बड़े से बड़ा पाप कर डालने पर भी उससे छूटने की सरलतम विधियाँ पुराणों में दी हैं तो फिर कौन व्यक्ति होगा जो सदाचार-स्वाध्याय ईश्वराराधन, योग-यज्ञ-तप आदि के अनुष्ठान में समय लगावेगा। देश में बुराइयों के प्रति निर्भयता पैदा करने में पुराणों का बड़ा हाथ रहा है। वेद की आदर्श मर्यादाओं का विध्वंस इन्हीं पुराणों ने किया है। वैदिक शास्त्रों ने जहाँ ज्ञानोपार्जन, एवं कर्मकाण्ड की ओर मानव को प्रेरित किया है वहाँ पुराणों ने उनके विपरीत स्वर्ग एवं मोक्ष के सरल मार्ग दर्शाकर जनता को दुराचारी बनाने में योग दिया है।

कहा जाता है कि पुराणों में इतिहास की बहुमूल्य सामिग्री दी हुई है। परन्तु जिन्होंने पुराणों को अन्धविश्वास त्यागकर पढ़ा है वे जानते हैं कि पुराणों में वर्णित इतिहास सम्पूर्ण काल्पनिक कहानियों के रूप में है। वह भी ब्रह्मा-विष्णु-महादेव इन्द्र व दुर्गा के युद्धों एवं उनमें देवताओं की विजय व उत्कर्ष दिखाने मात्र के लिये सूत लोगों द्वारा गढ़ा गया है। लगभग सारे ही पुराणों में अधिकतर एक ही

प्रकार की कथाओं व कहानियों का वर्णनहै। केवल वर्णन शैली में भिन्नता मिलती है। भविष्य पुराण के प्रति सर्ग पर्व को ही हम ऐसा पाते हैं जिसमें भारत के राज्य वंशों का, यवन राज्य का तथा अंग्रेजों के भारत आगमन तथा १० वें लार्ड तक का इतिहास कुछ ठीक-ठीक दिया गया मिलता है। और उसके बारे में यह निश्चित है कि यह पुराण अंग्रेजी राज्य काल में बनाया गया है और इस पुराण का उल्लेख सभी पुराणों में होने से स्पष्ट है कि सारे पुराणों का पुनर्गठन अंग्रेजी राज्य में हुआ है। इस पुराण को छोड़कर शेष पुराणों में ऐतिहासिक दृष्टि से कोई सामग्री नहीं दी है। पुराणों की जिन-जिन कथाओं में व्यक्तियों या देवताओं के नाम दिये हैं, उन नामों को गढ़ने की शैली तथा उनकी उत्पत्ति की जो कथायें उनमें दी है, उन्हें यदि ध्यानपूर्वक देखा जावेगा तो वे स्वयं कल्पित समझ में आजावेंगी।

भारत को देवतावाद की कल्पना पुराणों की देन हैं। जिस पुराण में एक देवता की प्रशंसा दी है तो उसमें अन्य सभी देवताओं की घोर निन्दा भी दी है। सारे ही पुराण देवताओं की निन्दा स्तुति की कथाओं से भरे पड़े हैं। दृष्टान्त के लिये हम एक प्रमाण नीचे देते हैं। शिवजी की महानता का वर्णन करते हुए पुराणकार लिखता है—

सारे देवता शिवजी के नौकर हैं

शिव सामान्य वक्तारं शिव सामान्य दर्शिनम्।
दृष्ट्वा स्नायात् सचैलं सन् शिव सामान्य संगिनम्॥
महेशस्यैव दासोऽयं विष्णुस्तेनानुकम्पितः।
श्रुति स्मृति पुराणानां सिद्धान्तोऽयंयथार्थतः॥
इन्द्रोपेन्द्रादयः सर्वे महेशस्यैव किंकराः।
तेन तुल्यो यदा विष्णुर्ह्यावापदि गद्यते॥
षष्ठि वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः।

(सौर पुराण अ० ४०)

अर्थात्—जो मनुष्य शिवजी के समान विष्णु को देखता है व शिवजी के समान ब्रह्मा आदि देवताओं को बताता है, वह पापी है। उसे देखकर कपड़ों सहित स्नान करना चाहिये। विष्णु शिवजी के नौकर हैं, यह श्रुति स्मृति, पुराणों का सिद्धान्त है। इन्द्रादि सभी देवता शिवजी के नौकर हैं। जो मनुष्य ब्रह्मा-विष्णु आदि को शिवजी के समान कहता है वह मर कर ६० हजार साल तक पाखाने का कीड़ा बनेगा।

इसी प्रकार के वर्णन अन्य पुराणों में विष्णु की प्रशंसा व शिव आदि की निन्दा में दिये गये हैं। इनसे यह स्पष्ट है कि पुराण भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक लोगों के द्वारा अपने २ मत व देवता की प्रशंसा में लिखे गये ग्रन्थ हैं। चतुर लेखकों ने उन पर अपना नाम तो नहीं दिया पर व्यास जी के नाम से उनको प्रसिद्ध कर दिया ताकि जनता में उनकी मान्यता में कोई सन्देह न रहे, बल्कि उनकी प्रमाणिकता पर व्यास जी की मोहर लग जावे।

यदि फिर भी कोई पौराणिक विद्वान् यह कहने की धृष्टता करे कि अष्टादश पुराण व्यास जी कृत ही हैं, तो हम उसके इस दम्भपूर्ण दावे के खण्डन के लिये पुराण में से उनके भिन्न २ रचयिताओं के नामों की सूची उपस्थित करते हैं। हमारा यह दावा नहीं है कि पुराण-कर्ताओं की यह सूची सत्य ही है, किन्तु इस पुराण के प्रमाण से यह तो सिद्ध हो ही जावेगा कि वर्तमान अठारह पुराण व्यास कृत नहीं हैं। चूँकि यह सूची सनातन धर्म के मान्य पुराण में दी है अतः पुराणों को मान्य समझने वालों मुँह पर इस प्रमाण से ताले लग जावेंगे।

पुराण बनाने वालों की सूची

अष्टादश पुराणानि केन प्रोक्तानि किं फलम्।
ब्रूत मे विदुषां श्रेष्ठा वेद शास्त्र परायणाः ॥८॥
इति श्रुत्वा वचो रम्यं विद्वान्सः शास्त्रकोविदाः।

अब्रुवन्वचनं रम्यं कृष्णं शंसर्व धर्मगम् ।।९।।
पाराशरेण रचितं पुराणं विष्णु दैवतम् ।
शिवेन रचितं स्कान्दं पाद्मं ब्रह्ममुखोद्भवम् ।।१०।।
शुक्र प्रोक्तं भागवतं ब्राह्मं वै ब्रह्मणाकृतम् ।
गारुणं हरिणा प्रोक्तं षड वै सात्विक संभवाः ।।११।।
मत्स्य कूर्मो नृसिंहश्च वामनः शिव एवच ।
वायुरेतत्पुराणानि व्यासेन रचितानि वै ।।१२।।
राजसाः षट्स्मृता वीर कर्मकाण्डमयाभुवि ।
मार्कण्डेयं च वाराहं मार्कण्डेयेन निर्मितम् ।।१३।।
आग्नेयमंगिराश्चैव जनयामास चोत्तमम् ।
लिङ्ग ब्रह्माण्ड के चापि तण्डिना रचिते शुभे ।।
महादेवेन लोकार्थे भविष्यं रचितं शुभम् ।।१४।।
तामसाः षट् स्मृताः प्राज्ञैः शक्ति धर्मपरायणः ।।१५।।

(भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व खण्ड ३ अ० २८)

अर्थ—हे वेद शास्त्र के जानने वाले विद्वान् ! मुझे बतलाओ कि अठारह पुराणों को किन लोगों ने बनाया व उनका क्या फल है ? यह सुन्दर वचन सुनकर सब कुछ जानने वाले कृष्णांश से उत्पन्न विद्वान् ने कहा । (८-९) । विष्णु पुराण पाराशर ऋषि ने व स्कन्द पुराण शिवजी ने बनाये हैं । पद्म पुराण ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है । भागवत पुराण शुक्राचार्य ने, ब्रह्म पुराण ब्रह्मा ने, गरुड़ पुराण हरि ने बनाये हैं । यह छः पुराण सात्विक पुराण हैं । मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वामन, शिव तथा वायु ये छः पुराण व्यासजी ने बनाये हैं । ये छः राजस पुराण हैं और कर्म काण्ड के लिये हैं । मार्कण्डेय तथा वाराह पुराण मार्कण्डेय मुनि ने बनाये हैं । अग्नि पुराण अङ्गिरा ऋषि ने

बनाया है। लिङ्ग और ब्रह्माण्ड पुराणों को तण्डि मुनि ने बनाया है तथा लोक के कल्याण के लिये भविष्य पुराण को महादेव जी ने बनाया है। यह छः शक्ति-धर्म परायण तामस पुराण हैं।" हमने पीछे देखा है कि पद्म पुराण में नरक में ले जाने वाले तामस पुराण-मत्स्य, कूर्म-स्कन्द-लिङ्ग-शिव, और अग्नि को बताया है। तथा यहाँ भविष्य पुराण में तामस पुराण-मार्कण्डेय-वाराह-अग्नि-लिङ्ग-ब्रह्माण्ड तथा भविष्य को माना है। इस प्रकार अठारह पुराणों में से मत्स्य-कूर्म-लिंग-शिव-अग्नि-मार्कण्डेय-वाराह-ब्रह्माण्ड तथा भविष्य यह १० पुराण तो पाठकों को नरक में ले जाने वाले रहे। उनका तो वहिष्कार होना ही चाहिये। शेष आठ पुराणों में से कुछ राजस हैं व कुछ सात्विकी हैं। उन्हें भी सोच समझकर पढ़ना चाहिये, यह पुराण का स्पष्ट उद्देश्य है। इससे १८ पुराणों का मान्य होना भी समाप्त हो जाता है। खूबी यह है कि उपरोक्त प्रमाण के अनुसार भविष्य पुराण को शिवजी ने, तथा अन्य पुराणों की मान्यतानुसार सारे पुराणों को विष्णु जी के खास अवतार व्यास जी ने बनाया है अर्थात् पुराणों के भक्त पौराणिकों को घोर नरक में भेजकर विष्णु जी व शिवजी उनका सर्वनाश अथवा कल्याण करेंगे, यह विचारणीय प्रश्न है। लोगों को अब इससे सचेत हो जाना चाहिये।

सौर पुराण के कर्त्ता का झगड़ा

देवी भागवत स्कन्द १ अ० श्लोक १५ में लिखा है—

"सौरं पाराशर प्रोक्तं"

अर्थात्—सौर पुराण को पाराशर ऋषि ने कहा था जो व्यास जी के पिता थे। परन्तु सौर पुराण पर लिखा है—

'सौरं पुराणं व्यासकृतम्'

अर्थात्—सौर पुराण पाराशर पुत्र व्यास जी ने बनाया। यह

झगड़ा भी अन्य पुराणों के कर्ताओं के झगड़े के समान ते होना चाहिये कि सौर पुराण के वास्तविक बनाने वाले पाराशर जी थे या व्यास जी थे ?

हमने पीछे दिखाया था कि १८ पुराणों को ब्रह्माजी द्वारा बनाया गया शिव पुराण में बताया है। विष्णु पुराण में लिखा है कि पाराशर जी ने पुराण बनाये हैं। देवी भागवत ५-१६-१२ में लिखा है कि पुराण अनेक धूर्तों ने बनाये हैं। अन्य पुराणों में १८ पुराणों का कर्ता व्यास जी को बताया गया है। और भविष्य पुराण ने अङ्गिरा-शुक्राचार्य, पाराशर, व्यास, मार्कण्डेय-तण्डि आदि ऋषि मुनियों, तथा ब्रह्माजी-शिवजी व विष्णुजी को पुराण रचयिता बताया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पुराणों का बनाने वाला कोई भी एक व्यक्ति नहीं रहा है, यह बात पुराणों के ही प्रमाणों से सिद्ध हो चुकी है। अतः किसी का भी यह दावा करना कि पुराण वेद व्यास जी महाराज के बनाये हुए हैं, एक दम गलत है। भागवत पुराण को दैत्य गुरु शुक्राचार्य कृत बताकर उसकी प्रमाणिकता पर भविष्य पुराणकार ने एक भीषण प्रहार किया है। भागवत में श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के निर्मल चरित्र पर जो गोपियों के साथ दुराचार के लाञ्छन लगाये गये हैं तथा कृष्ण को 'सुरतनाथ' अर्थात् सम्भोग का पति (भागवत १०।३२।२ पं० ज्वालाप्रसाद का भाष्य बम्बई छापा) बताकर बदनाम किया गया है उसे देखकर यह बात कुछ जंचती भी है कि संस्कृतज्ञ दैत्य गुरु शुकाचार्य ही उसके बनाने वाले होंगे। अन्यथा कृष्ण के निर्मल चरित्र पर लाञ्छन लगाने वाली मिथ्या कहानियाँ गढ़ने व ऐसा पुराण बनाने का साहस किसी वैष्णव या व्यास जी में तो हो ही नहीं सकता था।

कुछ पौराणिक विद्वानों को वेद के निम्न दो स्थलों में पुराण शब्द देखकर इन्हीं १८ पुराणों के वर्णन का भ्रम हो जाया करता है।

वेद में पुराण शब्द

'ऋचः समानि' 'छन्दांसि पुराणं यजुषासह ।

(अथर्व ११।४।२४)

इसमें पुराण का अर्थ सृष्टि विद्या सम्बन्धी मन्त्र है। (यजुषा सह) का 'कर्म काण्ड सम्बन्धी मन्त्रों के साथ' यह अर्थ होगा।

यत्र स्कम्भः प्रजयन पुराण व्यवर्तयत् ।

(अथर्व १०।७।२७)

इस मन्त्र में 'पुराण' का अर्थ सृष्टि होगा।

पुराण—पुरानवं भवति अर्थात् पुरानी होकर नई होती है। अतः सृष्टि को पुराण कहते है। इस मन्त्र में स्कम्भ के एक अंग को पुराण कहा गया है।

यदि वेद में सनातनी पण्डितों को राम-कृष्ण-सीता-शब्द कहीं दीख पड़ते हैं तो वे लोग वेद में दशरथ पुत्र रामचन्द्र, वासुदेव पुत्र श्रीकृष्ण एवं जनकनन्दिनी सीता का इतिहास मानने लगते हैं। इसी प्रकार यदि मुसलमान को 'शतमदीनः' पद वेद में मिल जाता है तो उसे मक्का मदीना का स्वप्न आने लगता है। वेद में पुराण शब्द मिल जाने पर सनातनियों को १८ पुराणों का उल्लेख दीखने लगा है। वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के प्रारम्भ में लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हुआ था जब पुराणों का रचना काल भारत में अंग्रेजी शासन काल तक का है। फिर भी इन बुद्धि के भण्डार पौराणिक विद्वानों को वेदों में १८ पुराणों का उल्लेख समझ में आता है। इनकी बुद्धि की बलिहारी है।

पुराणों के बनाने का उद्देश्य भी पुराणों ने इस प्रकार बतलाया है कि:—

पुराण बनाने का उद्देश्य क्या था ?

स्त्री शूद्र द्विज बन्धूनां न वेद श्रवणंमतम् ।
तेषामेव हितार्थाय पुराणानि कृतानि वै ॥२१॥

(देवी भागवत १।३)

अर्थ—स्त्री, शूद्र व चाण्डालों के लिये क्यों कि वेद सुनने की आज्ञा (सनातन धर्म में) नहीं है। अतः उनके कल्याण के लिये ही पुराणों की रचना की गई है।

विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः ।५४।
अष्टादश पुराणानि चरितं राघवस्य च ।५५।

(भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व अ० १)

अर्थ—विशेषकर शूद्रों को पवित्र करने के लिये १८ पुराण और रामायण की रचना की गई है।

व्यवहार में भी हम देखते हैं कि बेपढ़े लिखे लोगों, शूद्रों एवं स्त्रियों को ठगने खाने के लिये पौराणिक पण्डित-वर्ग रामायण तथा पुराणों की कथायें किया करता है। अतः स्पष्ट है कि इनको ही ठगने के लिये इन पुराणों की रचना की गई थी। पुराणों की ऊटपटांग बातों का शिक्षित जनता पर तो प्रभाव पड़ नहीं सकता है। अशिक्षित वर्ग पर ही पुराणों के नाम पर सनातन धर्म का जादू सवार है। यदि जनता पुराणों की वास्तविकता को समझ ले तो सारा उनका बालू की भीत पर खड़ा पौराणिक धर्म एक ही प्रहार में विनष्ट हो जावेगा।

हमने इस पुस्तक में पुराणों की स्थिति पर संक्षेप में प्रकाश गत पृष्ठों में डाला है। आशा है पाठक उसे ध्यानपूर्वक देखेंगे व पुराणों के नाम पर जनता में फैलाये जाने वाले भ्रम के निवारण के लिये प्रयास करेंगे तथा जनता को बतलावेंगे कि पुराणों का शास्त्रीय दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। उनकी रचना साम्प्रदायिक लोगों द्वारा अपने मतों के समर्थन में जनता को गुमराह करने के लिये की गई थी। पुराणों की रचना भारत के गुप्त काल से लेकर अंग्रेजों के शासन काल तक चलती रही है और सभी पुराणों में विषय की दृष्टि से एक-रूपता बनाये रखने के लिये निरन्तर कमीवेशी की जाती रही है।

आज भी पुराणों के भिन्न-भिन्न संस्करणों में श्लोकों की संख्या में भारी अन्तर दिखाई देता है । महाभारतकालीन श्री वेदव्यासजी से उनकी रचना का कोई सम्बन्ध नहीं है। वर्तमान पुराणों ने सारे ही ऋषि-मुनि एवं महात्माओं को कलंकित किया है, सारे ही सनातनी कल्पित देवताओं को छली-कपटी-परनारी लम्पट एवं दुष्ट बतलाया है। आधे से अधिक अर्थात् १८ में से १० पुराण तामस बतलाये गये हैं। उनके वहिष्कार का आदेश भी दिया गया है और बतलाया गया है कि वे नरक में ले जाने वाले हैं। पता नहीं इन नरक में ले जाने वाले मनहूस पुराणों की रचना ही क्यों की गई ? व ऐसे खराब पुराणों को छापना व प्रचार आदि पौराणिक लोग क्यों करते हैं ? नरक में ले जाने वाले पुराणों को तो बोरों में भरकर गहरे समुद्र में डुबा देना चाहिये ।

पुराणों में अंग्रेजों के भारत में शासन काल तक का उल्लेख है, पर भारत की आजादी, महात्मा गान्धी, सरदार पटेल, ६०० रियासतों के विलय, पाकिस्तान निर्माण एवं पाकिस्तान में हिन्दुओं के विध्वन्स का कोई उल्लेख क्यों नहीं है ? यदि ये भविष्यवाणियाँ मानी जावें तो इधर की सभी बातों का उल्लेख भी होना आवश्यकीय था । जैन व बौद्ध धर्मों का उल्लेख लगभग सारे ही पुराणों में आता है, जिससे स्पष्ट है कि पुराणों का निर्माण काल जैन व बौद्ध काल के आरम्भ के बाद से अंग्रेजी साम्राज्य की भारत में स्थापना तक का है । उनमें साम्प्रदायिक विद्वेष भरा पड़ा है जो उनके भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिकों द्वारा निर्माण का संकेत करता है। हमने संक्षेप से उन विषयों पर इस ग्रन्थ में पीछे प्रकाश डाला है। विशेष जानने के लिये जिन को सम्भव हो वे सारे पुराणों का तुलनात्मक अध्ययन स्वयं करें । पुराणों की वस्तु स्थिति उनके सामने आजावेगी और वे हमारे द्वारा प्रतिपादित विषय से सहमत होंगे ।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्र परिग्रहण क्रमांक 2874
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

डा० श्रीराम आर्य कृत–

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला' की क्रान्तिकारी पुस्तकों की सूची

अवतार रहस्य (अवतारवाद का पोलखाता)	मू०	१.५०	न० पै०
मुनि समाज मुख मर्दन		१.५०	,,
शिवलिंग पूजा क्यों ? (मूत्रेन्द्रिय पूजा का भंडाफोड़)		१.१२	,,
पौराणिक गप्प दीपिका		·५५	,,
शिवजी के चार विलक्षण बेटे		.३७	,,
माधवाचार्य की चुनौती का उत्तर		.४४	,,
मृतक श्राद्ध खण्डन		.३१	,,
पुराणों के कृष्ण		.३१	,,
शास्त्रार्थ के सनातनी चैलेञ्ज का उत्तर		.२५	,,
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है		.२५	,,
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था		.२५	,,
पौराणिक मुख चपेटिका		.१६	,,
नृसिंह अवतार बध		·१२	,,
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न		.१२	,,
हिन्दू संगठन का मूल मन्त्र		·६	,,
ईसाई पैगम्बरों का चरित्र चित्रण		.६	,,
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न		.१०	,,
पुराण किसने बनाए		.७५	,,
गीता का पोलखाता			,,

नोट—कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं। धार्मिक पाखण्डों के खण्डन एवं वैदिक धर्म के प्रचार के लिए इन पुस्तकों को भारी संख्या में मंगाकर प्रचार करावें। इन पुस्तकों ने मतवाले मतवादियों में देश एवं विदेशों में भारी हलचल मचा दी है।

व्यवस्थापक–

वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ,
कासगंज (उ.प्र.) भारतवर्ष।

मुद्रक–बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा